कोयम्बतुर में प्रतिष्ठा

कन्याकुमारी में
प्रतिष्ठा विधान करवाते
पूज्यश्री

सन् 1998 से लगातार प्रकाशित

जहाज मन्दिर

अधिष्ठाता - पूज्य गुरूदेव उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

▪ वर्ष : 11 ▪ ▪ अंक : 12 ▪ ▪ 5 मार्च : 2015 ▪ ▪ मूल्य : 20 रु. ▪

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर मरुधर मणि

श्री मणिप्रभसागरजी म. सा.

स्वर्णिम चातुर्मास इचलकरंजी २०१४

के 56 वें वर्ष प्रवेश पर जन्म दिन की

हार्दिक शुभकामनाएँ अभिवंदना.... अभिनंदना...

ज्यों बादल उमड़-घुमड़ आये,
धरती की प्यास बुझाने को,
त्यों हुआ आगमन सद्गुरू का,
भक्तों पे प्रेम लुटाने को ।।

श्रद्धावंत

श्री जैन श्वेताम्बर मणिधारी जिनचन्द्रसूरि दादावाड़ी संघ

श्री पाद नगर, चांदनी चौक, इचलकरंजी-416115 महा.

फोन : (0230) 2420700

आगम मंजूषा

भगवान महावीर

गुणसुट्ठियस्स वयणं, घयपरिसित्तु व्व पावओ भाइ ।
गुणहीणस्स न सोहइ, नेहविहुणो जह पईवो॥

-बृहत्कल्पभाष्य २४५

गुणवान व्यक्ति का वचन घृतसिंचित अग्नि की तरह तेजस्वी होता है, जबकि गुणहीन व्यक्ति का वचन स्नेह-रहित (तैलशून्य) दीपक की तरह तेज और प्रकाश से शून्य होता है।

पूज्यश्री की निश्रा में कार्यक्रम

- चेन्नई में भागवती दीक्षा
- माता श्रीमती जयादेवी सेठिया
- एवं
- पुत्र संयमकुमार सेठिया
- की भागवती दीक्षा
- ता. 25 अप्रेल 2015 को चेन्नई में संपन्न होगी।
- धर्मनाथ मंदिर प्रतिष्ठा
- ता. 26 अप्रेल 2015 को होगी।

अनुक्रमणिका

1. नवप्रभात	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.	04
2. गुरुदेव की कहानियाँ	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.	05
3. प्रीत की रीत	साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.	06
4. ऐसे थे मेरे गुरुदेव	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.	08
5. श्रमण चिंतन	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.	09
6. मेरी अनुभूति	साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.	11
7. दुनिया की एक कड़वी हकीकत	सुश्री हीना बैंगानी, राजिम	12
8. चतुर्भंगी का चमत्कार	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.	13
9. पंचांग	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.	14
10. समाचार दर्शन	संकलन	15
11. जहाज मंदिर पहेली 105 का उत्तर		30
12. जहाज मन्दिर पहेली-106	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.	31
13. जहाज मंदिर पहेली 104 का उत्तर		33
14. जटाशंकर	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.	34

जहाज मन्दिर

मासिक

अधिष्ठाता

पू. गुरुदेव उपाध्याय प्रवर

श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

वर्ष : 11 अंक : 12 5 मार्च 2015 मूल्य 20 रू.

अध्यक्ष : संघवी जीतमल दांतेवाड़िया

महामंत्री : डॉ. यू.सी. जैन

जहाज मन्दिर में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक / प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है

सदस्यता शुल्क

संस्था संरक्षक	: 21,000 रूपये
मानद् संरक्षक	: 11,000 रूपये
15 वर्षीय सदस्यता	: 2500 रूपये
12 वर्षीय सदस्यता	: 2000 रूपये
6 वर्षीय सदस्यता	: 1000 रूपये
त्रिवार्षिक सदस्यता	: 500 रूपये
वार्षिक सदस्यता	: 200 रूपये

विज्ञापन सहयोग

अंतिम कवर पृष्ठ	: 15,000 रूपये
द्वितीय कवर पृष्ठ	: 11,000 रूपये
तृतीय कवर पृष्ठ	: 9,000 रूपये
अन्दर पूरा पृष्ठ रंगीन	: 7,000 रूपये
रंगीन अन्दर आधा पृष्ठ	: 3,500 रुपये
सामान्य पूरा पृष्ठ	: 3,000 रुपये
सामान्य आधा पृष्ठ	: 1500 रुपये

सदस्यता, विज्ञापन व सहयोग राशि
ICICI की किसी भी शाखा में
SHRI JIN KANTI SAGAR SOORI SMARK TRUST
BANK - ICICI JALORE
ACCOUNT NO. 065301000256
IFSC CODE - ICIC0000653

सम्पर्क सूत्र / प्रकाशक

श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट
जहाज मन्दिर
माण्डवला - 343042, जिला-जालोर (राज.)
फोन : 02973-256107, 256192, 9649640451
E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com
www.jahajmandir.org

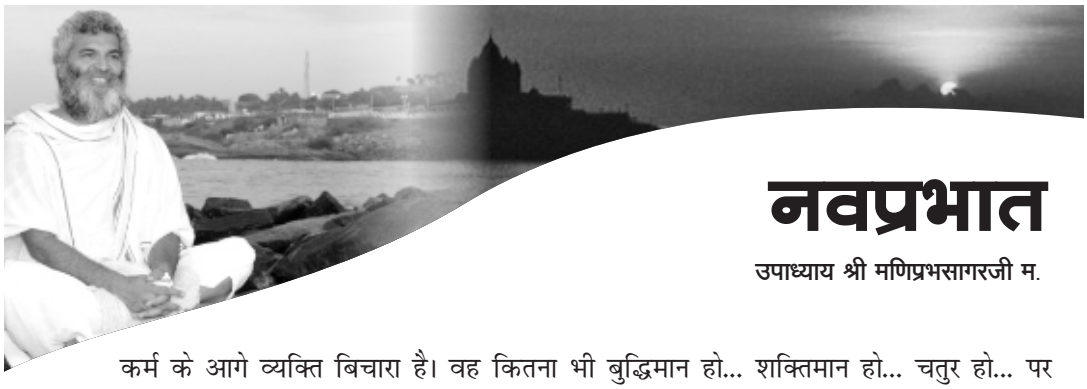

नवप्रभात

उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.

कर्म के आगे व्यक्ति बिचारा है। वह कितना भी बुद्धिमान हो... शक्तिमान हो... चतुर हो... पर कर्मसत्ता के आगे सर्वथा कमजोर है।

होशियार से होशियार व्यक्ति भी धोखा खा जाता है। वह भी वैसा कर बैठता है, जैसा कर्म उससे करवाता है। सच्चाई यह है कि व्यक्ति कर्म के हाथों की कठपुतली है। वह भले ऐसा विचार करे कि यह मैं कर रहा हूँ! व्यक्ति भले कर्त्ता-भाव में जीये, पर हकीकत में वह कर्म के नचाये नाच रहा है। अच्छा भी.. बुरा भी.. कर्म सत्ता ही उससे सब कुछ करवा रही है।

कर्म के स्वरूप को यथार्थ रूप से समझ कर अपने चिंतन को बदलना है। जो व्यक्ति कर्म सिद्धान्त की इस यथार्थ व्याख्या को समझ लेता है, वह व्यक्ति कभी भी किसी को दोषी नहीं मानता। वह केवल और केवल कर्म को दोषी मानता है।

इसलिये वह व्यक्ति उस व्यक्ति से लडाई नहीं करता.. वह कर्म से युद्ध करने का पुरूषार्थ करता है।

एक अखबार हमेशा शराब के विरोध में लेख प्रकाशित करता था। उसका मुख्य संपादक अपनी ऑफिस में अकेला था। वह किसी काम से बाहर जाने के लिये अपनी कुर्सी से खडा हुआ ही था कि एक शराबी आगबबूला होता हुआ अन्दर आया। गालियाँ बरसाता हुआ जोर से चिल्लाया- कहाँ है संपादक!

उसकी आवाज और आक्रोश देख कर संपादक ने कहा- भैया! बैठो! अभी उसे बुलाकर लाता हूँ। यह कहकर वह बाहर गया। वह इस आदमी से बचने के बारे में सोच ही रहा था कि एक शराबी और बाहर से भीतर की ओर आता हुआ उससे टकरा गया। वह भी उसी आवाज में बोला- है कौन इसका संपादक! जो शराब के बारे में ऐसा वैसा लिखता है।

वह धीरे से बोला- अन्दर बैठा है।

अन्दर जो ही दोनों आपस में गुत्थमगुत्था हो गये। दोनों एक दूसरे को संपादक समझ रहे थे। दोनों आपस में एक दूसरे को सजा देकर आनंद का अनुभव कर रहे थे। जबकि संपादक दूर खडा तमाशा देख रहा था।

कर्म उस संपादक की भांति है। जो लडा कर तमाशा देखता है। हमारा असली अपराधी कोई व्यक्ति या परिस्थिति नहीं, कर्मसत्ता है। उस पर विजय प्राप्त करने का पुरूषार्थ करना है। यही धर्म है।

गुरूदेव की कहानियाँ

4. शेर शिष्य बन गया

उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.

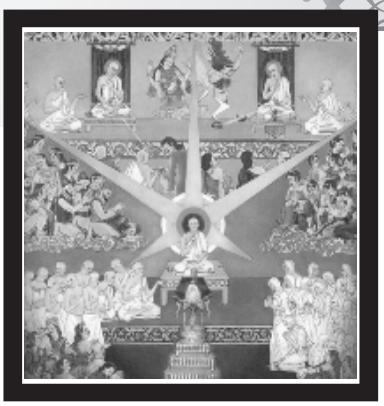

एक सत्य घटना है। इलाहाबाद की त्रिवेणी के पार एक घने जंगल में एक पहुँचे हुए योगीराज रहते थे। अपनी साधना में मस्त, सारी फिक्र छोड़े, अपने ध्यान-योग में..... समाधि में रमे हुए।

एक बार महात्मा मुंशीराम उन योगीराज के दर्शनार्थ पहुँचे। उनके साथ बहुत से लोग थे। आश्रम में जब पहुँचे तब रात्रि की चादर फैल रही थी। अन्धकार घना होता जा रहा था। गुफा में टिमटिमाते मिट्टी के दीये के शान्त/क्षीण प्रकाश में उन्होंने कोपीनधारी एक योगी को पद्मासन लगाए हुए देखा। उनकी आँखें मूँदी हुई थी। शरीर मानो निश्चेष्ट-सा था।

पर भीतर शांत प्रवाह जारी था।

काफी देर वे बैठे रहे। योगीराज की समाधि जारी थी। रात्रि के तीन बज गये। सभी दर्शनार्थी प्यासे से बैठे थे। पर बिना आशीर्वाद पाये वापस जाना भी उन्हें गवारा नहीं था। वे निर्निमेष योगी को देखे जा रहे थे।

इतने में शेर की गगनभेदी गर्जना उनके कानों से टकराई। सभी दर्शनार्थियों के होश फाख्ता हो गए। उन्होंने सोचा- योगीराज के दर्शन हो ना हो, पर आज वे शेर का भोजन अवश्य बन जायेंगे। सभी आकुल-व्याकुल थे। मस्तिष्क काम नहीं कर रहा था। इतने में उन्होंने मस्ती में झूमते, लम्बे घने केश हिलाते, धीर-गम्भीर चाल में चलते शेर को भीतर आते देखा।

शेर सीधा योगीराज के चरणों में जा लेटा। उनके पैर चाटने लगा।

सारे लोग आश्चर्यचकित हो इस अद्भुत दृश्य को देखने लगे। योगीराज समाधि से जागे। शेर पर हाथ फेरा। शेर आशीर्वाद के सुखद बोझ से भर मस्त होकर चला गया।

महात्मा मुंशीराम ने सभी लोगों के साथ नमस्कार किया। अपने भीतर के भावों को प्रकट करते हुए महात्मा ने कहा- योगीराज! यह तो बहुत बड़ा चमत्कार है।

योगीराज ने गम्भीर स्वर में कहा- नहीं, इसमें कोई चमत्कार नहीं। यह प्रेम, अहिंसा, करूणा, मानवता, कृतज्ञता की लहरों का परिणाम है।

योगीराज की आँखें शून्य में टिक गई। उनका मस्तिष्क अतीत की परछाइयों में खो गया। वे एक पुरानी घटना यों सुनाने लगे।

एक बार मैं जंगल में जा रहा था। किसी झाड़ी के निकट मुझे कराहने की मन्द आवाज सुनाई दी। मैंने वहाँ जाकर देखा। एक शेर दर्द से छटपटा रहा था। उसके पाँव में गोली लगी थी। खून बह रहा था। मैं तुरन्त आसपास किसी विशेष वनस्पति की खोज में जुट गया।

अतिशीघ्र किसी औषधि को लेकर वहाँ गया। घाव साफ किया। गोली बाहर निकाली और वनस्पति का लेप कर दिया। उस समय उस शेर की आँखों से टपकता श्रद्धा-भाव, आँखों से टपकती आस्था, आँसू की दो बूंदें, झुका हुआ मस्तक, मुझे आश्चर्यचकित कर गया।

लगातार कई दिनों तक मैंने पट्टी बांधी। वह ठीक हो गया। परन्तु वह मुझे न भूल सका।

वह प्रतिदिन मेरे पास आता है, अपनी आस्था के दो फूल चढ़ाता है, और चला जाता है। क्या हम इस प्रकार की कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं?

उपकारी के उपकार को न भूलने वाला वह शेर वास्तव में अभिनंदनीय है। क्या हम उस शेर की मानवता से कोई शिक्षा ग्रहण करेंगे?

प्रीत की रीत

श्रीमद् देवचन्द्र रचित

श्री सुविधिनाथ स्तवन

बहिनम. साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजीम.

दीठो सुविधि जिणंद, समाधि रसे भर्यो हो लाल।
भास्यो आत्म स्वरूप अनादि नो विसर्यो हो लाल
सकल विभाव उपाधि थकी मन ओसर्यो हो लाल
सत्ता साधन मार्ग भणी ए संचर्यो हो लाल॥१॥

परमात्मा सुविधि जिनेश्वर समाधि रस से भरपूर आज मुझे दर्शन के लिये उपलब्ध हुए हैं। उनके दर्शन से मेरा आत्म रूवरूप प्रकाशमान हो गया है। आनादिकाल से आत्मा पर छाया अंधेरा दूर हो चुका है। समस्त प्रकार की बाह्य उपाधि एवं राग द्वेष की विभाव दशा से मेरी आत्मा अब मुक्त हो गई है।

परमात्मा की प्रशांत मुख मुद्रा का दर्शन पाकर अब मैं अपने आत्म कल्याण की ओर अग्रसर हो रहा हूँ।

यहाँ श्रीमद्जी परमात्मा की अनेक विशेषताओं का विवेचन कर रहे हैं। श्रीमद्जी के हृदय में परमात्मा के प्रति अनुराग है। पर वह अनुराग बाह्य पर आधारित नहीं है। वे उनके अतिशयादिकों के कारण प्रभावित नहीं हुए हैं। उनके हृदय का प्रेम प्रभु के आंतरिक व्यक्तित्व के कारण है। बाह्य आधार तो कभी भी छिन्न भिन्न हो सकता है। पर आंतरिक व्यक्तित्व को कोई नहीं छीन सकता। समाधि चेतना की स्वभाव दशा है। परमात्मा समाधि के अक्षय, अखंड आनंद को उपलब्ध हो गये हैं। उनका दर्शन भी समाधि प्राप्ति की प्रेरणा देता है।

आधार का अपना मूल्य होता है। कभी दृष्टि उपर जाती है और कभी नीचे! कभी आँखें पत्तों पर टिकती है तो कभी जडों पर! अगर परिचय और सौन्दर्य तक दृष्टि को सीमित करना है तो नजरें ध्वज पर जानी चाहिये परंतु अगर मकान की मंजिल बढानी है तो नजर नींव पर जानी चाहिये। जिस समय व्यक्ति मंजिल बढाना चाहेगा, उस समय वह ध्वज के सौन्दर्य में खोया होगा तो अनर्थ को जन्म देगा, उस समय तो उसे नींव की मजबूती को समझना होगा। आधार का अपना महत्व और मूल्य है। आधार का मूल्य समझे बिना क्रिया का महत्व नहीं होता।

एक सामान्य मकान के निर्माण के लिये आधार को देखना आवश्यक है तो जीवन निर्माण के लिये आधार की मजबूती अनिवार्य है। श्रीमद्जी अपने जीवन निर्माण के लिये परमात्मा को आधार बनाते हैं। जो स्वयं अशान्ति और तनाव के शिकार हैं, वे अपने अनुयायियों को शान्ति उपलब्ध नहीं करवा सकते।

प्रभु चूंकि स्वयं समाधिमय हैं अत: हमें भी उपलब्ध करवा सकते हैं। उनके दर्शन भी समाधि को जगाने की प्रेरणा देते हैं। हमारा जीवन अनेक प्रकार की समस्याओं से आक्रान्त है। किसी ने प्रश्न पूछा- मकान क्यों?उत्तर अत्यन्त सीधा, सरल! चूंकि आंधी है, तूफान है, चोर है, लुटेरे हैं, सर्दी और गर्मी है, उन सबसे बचने के लिये मकान जरूरी है। ठीक उसी प्रकार हमारे जीवन में समस्याऐं हैं परिवार की, पैसे की, मकान की, दुकान की, स्वास्थ्य की, शिक्षा की और इन्हीं सब समस्याओं का मूल से समाधान करने के लिये समाधि की साधना करनी है।

समाधि प्राप्त चैतन्य को देखकर उसी प्रकार की उत्कृष्ट भूमिका पर पहुँचने की श्रीमद्जी के जीवन में उत्सुकता जग गई है और उसकी पहली भूमिका है- आत्म स्वरूप का जागरण! अधिकांशत: मनुष्य वर्तमान के जीवन को ही अस्तित्व की सीमा समझ लेते हैं। कुछ गुणसूत्रों के आधार पर तो मात्र शरीर का निर्माण होता है। इन्हीं को अपने अस्तित्व का आधार मानने वाला कभी आत्म स्वरूप को उपलब्ध नहीं हो सकता। आत्मा की अमरता पर विश्वास रखना अनिवार्य है।

श्रीमद्जी की अनादिकाल की विकृतियाँ और परिग्रह की उपाधियाँ स्वत: विस्मृत हो गई है। मन इन बाह्य

विकृतियों से हटकर अपने अंतर में उतरने को लालायित हो उठा है।

नकली चीज तभी तक आँखों को आनंद देती है जब तक असली चीज के दर्शन नहीं हो जाते। बालक आटे, पानी और शक्कर के मिश्रण को तभी तक दूध समझने की भूल करेगा जब तक वह दूध के असली स्वरूप को नहीं चखेगा। श्रीमद्‌जी अब शरीर और चेतना दोनों के गुण धर्म समझ चुके हैं अत: अब उन्हें बाह्य उपाधियाँ लुभा नहीं सकती।

तुम प्रभु जाणंग रीति, सर्व जग देखता हो लाल।
निज सत्ताए शुद्ध सहुने लेखता हो लाल।
भोग्यपणे निज शक्ति अनंत गवेषता हो लाल ॥ २॥

प्रभु! तुम सर्वज्ञ होने के कारण सब कुछ जानते हो फिर भी राग द्वेष नहीं करते। समस्त पदार्थों को उनके मूल स्वभाव से देखते हो, परद्रव्यों में जीव द्रव्य की परिणति देखकर उन पर द्वेष नहीं करते। अपनी शक्ति से अपने निज स्वरूप के ही आप भोक्ता हो।

परमात्मा ने चार भावनाओं का एक अद्‌भुत दर्शन हमें दिया है। संसार में विभिन्न प्रकार के प्राणियों के स्तर है। उत्कृष्ट कोटि के भी हैं तो निम्न कोटि के भी हैं। परमात्मा का अनुयायी उन्हें देखकर कैसा चिन्तन करें?इसका स्पष्ट दर्शन इन चार भावनाओं में आ जाता है। जो जीव अत्यन्त उच्च स्तरीय साधना का जीवन जीता है, उसे देखकर हृदय अहोभाव और धन्यता की अनुभूति से भरना चाहिये तो समान स्तर की आचार भूमिका पर टिके व्यक्तियों को देखकर मित्रता के भाव आने चाहिये। किसी डाकू, हिंसक, कसाई आदि अनेक आत्मिक विकृतियों के साथ जीने वालों के प्रति द्वेष पैदा नहीं होना चाहिये। उसके प्रति भी मध्यस्थ अथवा उदासीनता के भाव ही जगने चाहिये। दुखी, पीडित, पंगु, अपाहिज आदि शारीरिक विकृति के साथ जीने वाले प्राणियों के प्रति भी हृदय के अंदर अत्यन्त करूणा भाव पैदा होना चाहिये।

दुखमय जीवन जीते प्राणियों के प्रति वीतराग का अनुयायी उदासीन नहीं रह सकता और न उसके कर्मों का हवाला देते हुए यह कहेगा कि पूर्वजन्म में इसने ऐसा ही कर्म बांधा है अत: भोगना ही पडेगा। वह तो यह चिंतन करेगा कि काश! मुझे ऐसी शक्ति मिले कि मैं इन सभी को दुख मुक्त करूँ। उन्हें अपने कर्मों की दया पर छोडेगा नहीं। तीर्थंकर बंध की यही पूर्व भूमिका है। भाव दया का चिन्तन ही तीर्थंकर प्रकृति का बंध कराता है।

रोम-रोम जब इन भावनाओं से व्याप्त बनता है, तब एक साधक की भूमिका में प्रवेश प्राप्त होता है। परम प्रभु तो साधक की भूमिका से निकल कर सिद्ध बन चुके हैं। सिद्धों की भूमिका का विवेचन इस पद्य में हुआ है। सिद्धों की भूमिका में चैतन्य पूर्णज्ञानी है। अत: जानते देखते सब कुछ हैं फिर भी राग द्वेष से मुक्त है। प्रियता देखकर राग और अप्रियता देखकर द्वेष करना, यह सामान्य व्यक्ति की भूमिका है। प्रशस्त अर्थात् गुणीजनों को देखकर राग और शासन के विरोधी तत्वों के प्रति क्षोभ पैदा होना साधक द्वारा संभव है, परंतु समग्रता से राग और द्वेष चाहे वह प्रशस्त हो या अप्रशस्त उनका त्याग करना सर्वज्ञों के लिये ही संभव है।

परम प्रभु की आत्मा स्वभाव से स्थिर है और जो स्व में स्थिर हो जाता है, राग और द्वेष की तरंगें वहाँ नही उठती। परमात्मा शरीर में स्थित आत्मा को आत्मा के रूप में ही देखते हैं। किसी प्रकार की विकृति के साथ परमात्मा नहीं देखते जिसका जैसा स्वभाव है उसे वैसे ही देखते हैं। आत्मा को शरीर में रमते और उसके साथ आसक्त देखकर भी प्रभु द्वेष नहीं करते। अपनी अनंत भोग्य शक्ति से मात्र स्वसत्ता को ही रमण और भोगने योग्य मानते और समझते हैं अत: उसी में रमते हैं।

पर पदार्थों में रमण करना स्वभाव नहीं है, आरोपण है। आत्मज्ञान को उपलब्ध चेतना अपने अतिरिक्त समस्त परद्रव्यों के प्रति तटस्थ हो जाता है। जिसे यह अहसास हो जाय कि यह आग है और जलाना इसका धर्म है तो कोई भी समझदार उसमें हाथ नहीं डालेगा। वह उदासीन हो जायेगा।

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर मरुधर मणि **श्री मणिप्रभसागरजी म. सा.**
4 मार्च 2015 के **56** वें वर्ष प्रवेश पर जन्म दिन की
हार्दिक शुभकामनाएँ...अभिवंदना....अभिनंदना...
श्रद्धावंत
शा. विजयराज महेन्द्रकुमार चन्द्रगुप्तराज कुमारपाल अंकित जिनेशकुमार
सिद्धार्थ धनपाल बेटा पोता श्री पन्नालालजी कटारिया
बिलाडा निवासी हाल मैसूर

संस्मरण

36

ऐसे थे मेरे गुरुदेव

उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

पूज्य गुरुदेव श्री की दीक्षा को ज्यादा समय नहीं बीता था। उम्र लगभग 25 वर्ष की थी। खरतरगच्छ संघ में दीक्षित हुए लगभग 4 साल का समय बीता था। पूज्यश्री का अध्ययन काल चल रहा था।

पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री जिनहरिसागर सूरीश्वरजी म.सा. ने पूज्यश्री को अध्ययन हेतु जोधपुर रूकने का आदेश दिया था। वे एक जिन मंदिर के नीचे उपाश्रय में बिराजमान थे। सुबह ही सुबह संस्कृत पढाने हेतु एक पंडित प्रवर आते थे। पूज्यश्री उन दिनों एकासणा करते थे। सुबह लगभग तीन घंटे का समय पढाई में बीतता था।

वही समय लोगों के मंदिर आने का था। मंदिर दर्शन करने के बाद श्रावक अपना कर्त्तव्य समझ कर गुरु वंदन हेतु पूज्यश्री के पास आते थे। पूज्यश्री उस समय पढते होते। और श्राविकाऐं वंदन करती।

वंदन करने के बाद मांगलिक सुनाने का निवेदन करती। पढाई के समय मांगलिक सुनाना ठीक तो नहीं लगता। पर संकोच व मर्यादा के कारण मांगलिक सुना देते।

जब यह नित्यक्रम हो गया। तो बहुत समस्या हो गई। पढाई में विक्षेप होने लगा। पूज्यश्री ने समझाया भी कि अभी पढाई चल रही है। मांगलिक सुनाना उचित है। पर पढाई की अपेक्षा से उचित नहीं है।

श्राविकाऐं कहती कि बावजी! बडी नहीं तो छोटी मांगलिक ही सुना दीजिये।

शास्त्रों में लिखा है कि जब कोई साधु स्वाध्याय अथवा प्रतिलेखनादि क्रिया में व्यस्त हो तो उन्हें वंदन नहीं करना चाहिये। वंदन भी अनुज्ञा पूर्वक ही करना चाहिये। पर प्रायः देखा जाता है कि श्रावक श्राविकाओं में मर्यादा व अनुशासन भरे औचित्य का अभाव है। कभी आप किसी कार्य में व्यस्त है, कोई आया है और वंदना की है। व्यस्तता के कारण आपका ध्यान उस ओर नहीं है। आप उसे धर्मलाभ नहीं दे पाये हैं। तो वह पूरे गांव में ढिंढोरा पीटेगा कि महाराज तो हमें धर्मलाभ ही नहीं देते। महाराज तो केवल पैसे वालों को ही धर्मलाभ देते हैं।

पूज्यश्री ने सोचा, अब इसका कोई स्थायी समाधान ढूंढना होगा। मैं कमरा बंद कर बैठ नहीं सकता। गर्मी का समय है। पढाई भी जरूरी है। मांगलिक का मना भी कर नहीं सकता। आखिर क्या किया जाये! छोटी उम्र थी। उनके मानस में एक विचार आया। और दूसरे दिन से ही क्रियान्वित कर दिया।

पूज्यश्री ने एक बडा सा पन्ना लिया। उस पर बडे अक्षरों में नवकार महामंत्र और अर्हन्तो. की स्तुति, दासानुदासा. की स्तुति लिखकर सर्वमंगल. लिख दिया। उस पन्ने को गत्ते पर चिपका कर उचित जगह पर टांग दिया।

वंदना के बाद जिस ने भी कहा- मांगलिक!

गुरु महाराज ने उस पेपर की ओर इशारा कर कहा- पढ लो!

सब झेंप गये। यह कैसी मांगलिक है। कुछ ने तो पढी भी!

पर दूसरे दिन से लोगों ने मांगलिक निवेदन बंद कर दिया। पूज्यश्री की पढाई आराम से बिना किसी बाधा के आगे बढने लगी। पूज्यश्री जब यह घटना हमें सुनाते तो अपने बचपन पर मुक्त हास्य बिखेरते।

श्रमण चिंतन

27

स्वाध्यायः परावर्तना

मुनि श्री मनितप्रभसागरजीम.

स्वाध्याय साधक जीवन का प्राण तत्त्व है। श्वासोच्छ्वास के बिना कोई जीव जीवित रहे तो स्वाध्याय के बिना साधु की साधना जीवित रहे।

स्वाध्याय, तप के दो भेदों मे से आभ्यन्तर तप है। परमात्मा महावीर द्वारा प्ररूपित स्वाध्याय के पांच भेदों में से एक है- परावर्तना। इस परावर्तना को सरल शब्दों में पुनरावर्तन भी कहा जा सकता है।

परावर्तना क्या है?

- **परियट्टणयाएणं भंते। जीवे कि जणयइ?**

भगवन्! परावर्तना से जीव क्या प्राप्त करता है?

- **परियट्टणयाएणं वंजणाइं जणयइ वंजणलद्धिं च उप्पाएइ।**

परावर्तन से जीव को व्यंजनात्मक ज्ञान की प्राप्त होता है। व्यंजन लब्धि का उपार्जन होता है जिससे जीव स्मृत सूत्र-अर्थ को परिपक्व एवं संपुष्ट करता है तथा अस्मृत सूत्र-अर्थ को कंठस्थ करता है।

यह परावर्तना स्वाध्याय का महाप्रभाव है, जिससे पांच सौ गाथा वाले पुण्डरीक कण्डरीक अध्ययन की प्रतिदिन पांच सौ बार परावर्तन करके तिर्यग्जृंभक (मतान्तर-वैश्रमण) देव अगले भव में वज्रस्वामी बना तथा पलने में झुलते झुलते आचारांग आदि एकादश अंग आगमों को कंठस्थ कर लिया।

परावर्तना के लाभ-

शास्त्रकार फरमाते हैं कि यह परावर्तना स्वाध्याय का ही माहात्म्य है जिस कारण चतुर्दश पूर्वधर प्रतिदिन चौदह पूर्वों का स्वाध्याय करते हैं। परावर्तना स्वाध्याय से ही मासतुष मुनि ने **'मारुष मातुष'** बारह वर्ष का रहते रहते केवलज्ञान प्राप्त कर लिया। **'धम्मो मंगलमुक्किट्ठम्'** इस एक गाथा को मुनिवर ने 12 वर्ष तक रटी पर याद नहीं हुई। परावर्तन करते करते श्रुतज्ञान से भी महान् केवलज्ञान प्राप्त हो गया।

एक पुरानी पर बडी सुहानी कथा है।

एक बार गुरू ने शिष्यों से पूछा-

रोटी जले अंगार पर, बोल चेला किण न्याय।

पान सडे घोडो अडे, विद्या विसरी जाय।

सभी शिष्यों की ओर प्रश्न सूचक दृष्टि घुमाते हुए गुरू मुखर हुए-

- पान (पत्ता) क्यों सड़ता है?
- घोडा क्यों नहीं चल पाता है?
- विद्या क्यों विस्मृत हो जाती है?
- रोटी अंगारे पर क्यों जल जाती है?

और हॉ! इन चारों प्रश्नों का उत्तर एक ही होना चाहिये।

प्रश्न अलग-अलग और उत्तर एक? यह कैसे संभव होगा?

एक शिष्य ने उत्तर देते हुए कहा- गुरूदेव! परावर्तना के अभाव के कारण।

विशेष स्पष्टकरण करता हुआ वह शिष्य बोला-

- पत्ते को अगर आगे पीछे करते रहे तो सडता नहीं। एक तरफ पडा रहे तो वह खराब हो जाता है।
- अश्व को प्रतिदिन घुमाना जरूरी है। यदि ऐसा न हो तो अश्व की गति समाप्त हो जाती है। वह चल नहीं पाता।
- कण्ठस्थ सूत्र और अर्थ का यदि पुनः पुनः स्मरण, परावर्तन न किया जाये तो वह ज्ञान विस्मृति के अंधेरे मे लुप्त हो जाता है।
- चौथे प्रश्न का उत्तर यह होगा कि जब कोई गृहिणी रोटी सेकती है तो वह आगे-पीछे करती है। यदि तप्त तवे पर रोटी योंहि पडी रहे, तो वह जलकर राख हो जाती है

जैन इतिहास में एक वृद्धवादी हुए जो वादिदेवसूरि के नाम से भी सुप्रसिद्ध है। पहले उनका नाम मुकुंद था। आचार्य स्कंदिल के पास आर्हती प्रव्रज्या ग्रहण कर स्वाध्याय में

अनुरक्त बन गये। ज्ञान-प्राप्ति की तीव्र उत्कंठा के कारण दिन में तो भरपूर स्वाध्याय करते ही, रात्रि में भी उच्च स्वर से अभ्यास करते।

गुरू महाराज ने कहा-मुनिवर! रात्रि में अन्य साधुओं की निद्रा में बाधा तो होती ही है, अन्य हिंसक प्राणियों के जागने से अनर्थ भी होता है, अतः दिन में ही उच्च स्वर से स्वाध्याय किया करो।

एक दिन वृद्धवादी के स्वाध्याय पर व्यंग्य कसते हुए किसी श्रावक ने कहा-महाराज! आप इस बडी उम्र में भरपूर स्वाध्याय कर रहे हो! मूसल पर फूल उगाना चाहते हो? यह बात वृद्धवादी के मन को कचोट गयी। इक्कीस दिन तक उन्होंने ब्राह्मी विद्या की साधना की जिससे विद्यादेवी प्रसन्न हुई और वरदान दिया-**'सर्व विद्या सिद्धो भव!'**

वृद्धवादी देवी के सम्मुख चौराहे पर बैठकर धरती पर मूसल रोपकर बोले- **अस्मादृशा अपि यदा भारती त्वत्प्रसादतः।**

भवेयुर्वादिनां प्राज्ञा मुसलं पुष्यतां ततः॥

दूसरे ही क्षण मूसल पर फूल महक उठे।

श्रावक समझ गये कि निरन्तर लगन और तीव्र पुरूषार्थ से सब कुछ संभव है। फूल मूसल पर ही क्या, आकाश में भी खिलाया जा सकता है। इस परावर्तना स्वाध्याय के प्रभाव से वृद्धवादी सूरि जैन शास्त्रों के पारगामी और मूर्धन्य विद्वान् आचार्य बने।

परावर्तना के लाभ-

- घिसते-घिसते अनगढ पाषाण गोल-मृदु बन जाता है।
- रटते-रटते मंत्र सिद्धि का वरदान देता है।
- सहते-सहते पत्थर भगवान की प्रतिमा बन जाती है।

लेखन, प्रवचन, काव्य, सारी लौकिक-अलौकिक विद्याएँ परावर्तना स्वाध्याय से संभव है।

- सूत्र और अर्थ की परावर्तना से हृदय की शुद्धि होती है।
- शब्दोच्चारण से रसनेन्द्रिय की शुद्धि होती है।
- उच्चरित पाठ के श्रवण से श्रवणेन्द्रिय की शुद्धि होती है।
- ज्ञान-पुस्तक के पुनः पुनः दर्शन से चक्षुरिन्द्रिय की शुद्धि होती है।
- पवित्र सूत्रों के घनत्व से वातावरण एवं काल की शुद्धि होती है।
- आत्मा में शुभ-शुद्ध परिणामों के अवतरण से चैतन्य की शुद्धि होती है।

यह परावर्तना उच्च कोटि का स्वाध्याय है। सूत्र और अर्थ का पुनरावर्तन करते-करते एक मूर्ख विद्वान् तथा अज्ञ प्रज्ञ बन जाता है। जितना ज्यादा पुनरावर्तन होता है, ज्ञान उतना ही परिवक्व, शुद्ध, स्पष्ट, संदेश रहित तथा स्थिर बनता है। इससे वचन लब्धि एवं पदानुसारिणी लब्धि की भी प्राप्ति होती हैं। श्रुतपूर्व ज्ञान भी स्वमेव आत्मा में समुत्पन्न होता है और नये नये श्रुत का महादान देता है।

प्रासंगिकता-

एक व्यापारी का यह अभिप्राय रहता है कि वह कुछ न कुछ नया प्रतिदिन कमाएँ और इसके साथ पूर्वोपर्जित धन की सुरक्षा करना भी उसका ध्येय रहता है तथा भूलवश पूर्व-प्राप्त धन खो जाये तो चिन्तित होता है, इसी प्रकार एक मोक्षलक्षी आत्मा प्रतिदिन नया ज्ञान अर्जित करने के साथ-साथ पूर्व कण्ठस्थ-स्मृत ज्ञान को भी यथावस्थित बनाये रखता है।

आज के वातावरण में **'आगे-पाठ, पीछे सपाट'** की उक्ति चरितार्थ हो रही है। जो बालक बाल्यावस्था में पंच प्रतिक्रमण आदि कंठस्थ करता है, वह कॉलेज एवं व्यापार की जिन्दगी में सब कुछ विस्मृत कर जाता है पर उसे कोई अफसोस भी नहीं होता।

'संते बले संते वीरिये संते पुरूषाकारपरक्कमे' बल, वीर्य, और शक्ति पराक्रम के होते हुए जो जीव पूर्वोपार्जित पाठों का स्वाध्याय परावर्तना नहीं करता, वह ज्ञानावरणीय कर्म का बंध करता है पर इसका अर्थ यह नहीं कि वह सूत्रादि याद ही न करें, इससे तो ओर ज्यादा ज्ञानावरणीय कर्म बांधता है तथा आगामी भवों में मूर्ख, गूंगा, बहरा, मंदबुद्धि, जडबुद्धि और स्मृति के अभाव में लोक में हँसी, निंदा और उपहास का पात्र बनता है।

माँ-बाप को चाहिये कि स्वयं भी स्वाध्याय में रूचि ले तथा अन्तिम श्वास तक विद्यार्थी बने रहे, इसके साथ अपने लाल को स्वाध्यायी श्रावक बनाये ताकि वह जीवन के सच्चे लक्ष्य को प्राप्त कर सके।

मधुर संस्मरण

मेरी अनुभूति

बहिन म. साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.

परमात्मा महावीर के शासन में साधु रूप में प्रवेश मेरी लिये अत्यंत गौरवपूर्ण है। संयमी जीवन से जुड़ी समस्त प्रवृत्तियाँ मुझे अच्छी लगती है फिर भी मैं अपने जीवन में कई बार अपनी ही क्रियाओं से असंतुष्ट और बैचेनी अनुभव करती हूँ। परमात्मा ने जिस साधु धर्म का विवेचन किया था मैं उससे स्वयं को बहुत दूर पाती हूँ।

यह ठीक हैं कि मेरा वेश..... मेरा नाम..... मेरा जीवन भगवान् से जुडा हैं पर क्या मेरा अन्तर्मन भगवान के अनुकूल है। मेरा अन्तर्मन इस विचार मात्र से बैचेन हो उठता हैं कि यह मेरा अपने आपसे छल नहीं है। क्या में स्वयं के साथ आत्मवंचना नहीं कर रही हूँ।

प्रभु महावीर ने समता का उपदेश दिया नहीं था बल्कि समता का आचरण किया था। मैंने जब भी भगवान महावीर का जीवन चरित्र सुना हैं शायद सुनने के लिये सुना हैं अगर आचरण के लिये सुना होता तो उनका जीवन मेरी आचरण में होता। जबकि स्थिति यह हैं कि भगवान ने प्रतिकूलता की चरम स्थिति में भी अपने हृदय का माधुर्य खोया नहीं था और मैं सामान्य सी प्रतिकूलता होते ही अपना धीरज खो बैठती हूँ। आराधना पार्श्वनाथ की जिन्होंने कमठ और धरणेन्द्र के लिये समान वात्सल्य बरसाया पर आचरण तो ठीक उसके विपरित जिसमें हल्की सी प्रशंसा मिली फूल गया और हल्की सी निंदा मिली तो उदास हो गया।

जबकि न निंदा से मेरा नुकसान होता हैं और न प्रशंसा से लाभ। मैंने निंदा और स्तुत्ति से क्या खोया और क्या पाया। मेरा खोना और पाना तो इन दोनों स्थितियों से उपजी मानसिकता से है।

मैं मंदिर जाती भी इसीलिये हूँ कि मुझे परमात्मा को देखकर अपना विस्मृत आत्मस्वरूप याद आ जाय पर वर्षो हो गये परमात्मा के दर्शन करते करते अभी तक कहाँ याद कर पायी अपनी आत्मा की स्वभाव दशा को। कभी कभी तो लगता हैं मैं परमात्मा के दर्शन करके अपने दोषमुक्त जीवन जीवन की प्रार्थना कम दु:खमुक्त जीवन की प्रार्थना ज्यादा करती हूँ।

परमात्मा महावीर के दर्शन करके क्या मैंने कभी यह मांगा हैं-

भगवन्! तेरा मुझे कुछ मत दे। बस मात्र तेरी समता..... तेरी सहिष्णुता..... तेरा धीरज मुझे दे दो। जिस धीरज ने तुझे संगम के सामने अकंप और स्थिर रखा क्या उस धीरज को मैं अपना मित्र नहीं बना सकती?

एक बार शान्त और एकांत क्षणों में मैंने स्वयं से प्रश्न पूछा मैं सक्षम हूँ या महावीर?अगर महावीर सक्षम थे तो फिर उन्होंने अत्यंत सामान्य से ग्वाले के सामने भी समर्पण क्यों किया?ग्वाले ने चाहा और कानों में कीले ठोक दिये। पर जब गहरा चिंतन किया तो लगा, प्रभु महावीर का ग्वाले के सामने किया हुआ समर्पण उनकी कमजोर मानसिकता नहीं थी बल्कि उनकी आत्मविजेता की मानसिकता ने ही उन्हें समस्त प्रतिकूलता में समता रखवायी थी! यह मेरी अत्यंत कमजोर मानसिकता का ही परिणाम हैं कि मुझे कोई भी जब चाहे हँसा सकता हैं ओर जब चाहे कोई मुझे रूला सकता हैं। इसका अर्थ तो यही हुआ न कि में अपने द्वारा नहीं दूसरों द्वारा संचालित हूँ। मेरे संयम ग्रहण करने का लक्ष्य तो यही था न कि मैं मात्र और मात्र स्वसंचालित जीवन जीऊगी।

मैं चाहती हूँ मेरा संसार अटके पर जब तक कषाय-

मुक्त नहीं होती तब तक मेरा संसार कैसे अटक सकता है?अध्यात्म-योगी श्रीमद् देवचंद्रजी म. भी परमात्मा महावीर की स्तुत्ति करते हुए यही कहते हैं- **''राग द्वेषे भर्यो मोह वैरी नडयों''**

लोकनी रीतमां घणुएं राच्यो
क्रोधवश भवमाहे हुं शुद्ध गुण नवि रम्यों
भम्यों भवमाहे हुं विषय मातों''

अनंत दुर्गुणों से परिपूर्ण हूँ मैं। रागद्वेष एवं मोहग्रस्त मेरी चेतना को देखकर में स्वयं तुम्हारे पास आने में संकोच का अनुभव कर रहा हूँ। मेरी विशिष्टता एक ओर हैं ओर वह यह कि संसार व्यवहार में मेरी कुशलता की कोई सीमा नहीं हैं। एक तू ही हैं जो मुझे तार सकता हैं।

श्रीमद्जी के शब्दों में ही मैं भी अपना निवेदन प्रस्तुत करती हूँ कि मेरे पास किसी भी प्रकार की कोई जमा पुंजी नहीं हैं फिर भी मैं मात्र तेरी भक्ति की नौका के सहारे अपनी जिन्दगी को पार लगाना चाहता हूँ।

मेरा जीवन दोषमुक्ति की दिशा में आगे बढ़ता हैं तो निसंदेह मेरा चारित्र जीवन सार्थक बनता हैं।

दुनिया की एक कड़वी हकीकत

सुश्री हीना बेंगानी नयापारा-राजिम (छ.ग.)

इस दुनिया में बसे लोगों की अलग कहानी है!

जब किसी का विश्वास तोड़ते हैं, तब भी रोते हैं,

और जब किसी पर विश्वास करते है, तब भी रोते हैं!

जीवन क्या है?

सोये तो समाधि और उठे तो उपाधि !

जब दीवारों में दरारें आती है, तो दीवारें गिर जाती हैं

जब संबंधों में दरारें आती है, तो दीवारे बन जाती हैं

बचपन में जब भूल जाते तब कहते थे

याद रखना सीखो

और अब जब याद रखते हैं तो कहते हैं

भूलना सीखो

जिन्दगी भर पैसे की पीछे भागने वालों के

टेबल पर चांदी की थाली है, और भोजन में Diet खाखरा!!!

तत्त्वावबोध

17 चतुर्भंगी का चमत्कार

मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.

१२६ मिथ्यात्वी-सम्यक्त्वी

1. जन्म समय मिथ्यात्वी, अन्त समय सम्यक्त्वी- **चंडकौशिक सर्प**
2. जन्म समय सम्यक्त्वी, अन्त समय मिथ्यात्वी- **मंगु आचार्य**
3. जन्म समय मिथ्यात्वी, अन्त समय मिथ्यात्वी-**कालसौकरिक**
4. जन्म मृत्यु, दोनों समय सम्यक्त्वी- **अनुत्तर वैमानिक देव**

१२७ दान:द्रव्य और भाव

1. द्रव्य से सुपात्र दान- **कपिला दासी**
2. भाव से सुपात्र दान- **जीरण सेठ**
3. द्रव्य एवं भाव, दोनों से सुपात्र दान- **चंदनबाला**
4. द्रव्य एवं भाव, दोनों से सुपात्र दान नहीं- **कालसौकरिक कसाई, एकलेन्द्रिय, विकेन्द्रिय**

१२८ आना: जाना

1. नरक से आता है, नरक में जाता है- **तंदुलमत्स्य**
2. देवलोक से आते हैं, देवलोक में ही जाते हैं- **विजयादि चार अनुत्तर वैमानिक देव**
3. नरक एवं देवलोक से ही आते हैं- **तीर्थंकर, चक्रवर्ती**
4. नरक एवं देवलोक में नहीं जाते हैं- **नारकी एवं देव**

१२९ नमन

1. द्रव्य से नमन- **कृष्ण पुत्र पालक**
2. भाव से नमन- **अनुत्तर वैमानिक देव**
3. द्रव्य एवं भाव, दोनों से नमन- **कृष्ण पुत्र शांत**
4. द्रव्य एवं भाव, दोनों से नमन नहीं- **कपिल**

१३० आना एवं जाना....

1. जो जाकर न आये, वह- **जवानी।**
2. जो आकर न जाये, वह- **बुढापा।**
3. जो आये और जाये, वह- **धन।**
4. जो न आये, न जाये, वह- **आत्म-धर्म।**

१३१ अपनी अपनी विशेषता

1. छोटे से छोटे गुण को देखने वाले- **गुणानुरागी**
2. छोटे से छोटे दोष को देखने वाले- **छिद्रान्वेषी**
3. गुण और दोष, दोनों देखने वाले- **गुरू/माता-पिता**
4. गुण और दोष, दोनों नहीं देखने वाले- **सिद्ध भगवंत**

१३२ संयम-पर्याय और ज्ञान

1. संयम पर्याय अधिक, ज्ञान अल्प- **माषतुष मुनि (छद्मस्थ)**
2. संयम पर्याय कम, ज्ञान अधिक- **वज्रस्वामी, मणिधारी जिनचंद्रसूरि**
3. संयम पर्याय कम, ज्ञान कम- **मनक मुनि**
4. संयम पर्याय अधिक, ज्ञान अधिक- **शय्यंभवसूरि आदि**

१३३ अनुकंपा

1. द्रव्यानुकंपा पर भावानुकंपा नहीं- **अंगारमर्दकाचार्य**
2. भावानुकंपा पर द्रव्यानुकंपा नहीं- **अतिमुक्तक (नाव तिराना)**
3. भाव और द्रव्य, दोनों अनुकंपा- **गौतम आदि गणधर**
4. भाव और द्रव्य, दोनों अनुकंपा नहीं- **कालसौकरिक कसाई**

मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.

पंचांग

Apr. 2015

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
			1 चैत्र सुदि 12	2 चैत्र सुदि 13	3 चैत्र सुदि 14	4 चैत्र सुदि 15
5 वैशाख वदि 1	6 वैशाख वदि 2	7 वैशाख वदि 3	8 वैशाख वदि 4	9 वैशाख वदि 5	10 वैशाख वदि 6	11 वैशाख वदि 7
12 वैशाख वदि 8	13 वैशाख वदि 9	14 वैशाख वदि 10	15 वैशाख वदि 11	16 वैशाख वदि 12	17 वैशाख वदि 13/14	18 वैशाख वदि 30
19 वैशाख सुदि 1	20 वैशाख सुदि 2	21 वैशाख सुदि 3	22 वैशाख सुदि 4	23 वैशाख सुदि 5	24 वैशाख सुदि 6	25 वैशाख सुदि 7
26 वैशाख सुदि 8	27 वैशाख सुदि 9	28 वैशाख सुदि 10	29 वैशाख सुदि 11	30 वैशाख सुदि 12		

पर्व दिवस	
	2.04.2015 **प्रभु महावीर जन्म कल्याणक व उपा. समयसुन्दरजी स्व. अहमदाबाद**
	4.04.2015 **पाक्षिक प्रतिक्रमण व नवपद ओली समापन, श्री सिद्धाचल की यात्रा**
	18.04.2015 **पाक्षिक प्रतिक्रमण**
	21.04.2015 **वर्षीतप पारणा**
	28.04.2015 **प्रभु महावीर केवलज्ञान कल्याणक**
	29.04.2015 **चतुर्विध संघ स्नीपना दिवस**

त्रिवेणी संगम के साथ पंचान्हिका महोत्सव इन्दौर में सम्पन्न

दिनांक 4 फरवरी से 8 फरवरी 2015 तक पंचान्हिका महोत्सव भव्य रूप से दादावाडी रामबाग पर सम्पन्न हुआ। महोत्सव का प्रारंभ 4 फरवरी को पंचकल्याणक पूजा के साथ प्रारंभ हुआ। 5 फरवरी गुरूवार को महतरापद विभूषिता विनीता श्री जी म.सा. की 76 वीं दीक्षा पर्याय पर हीरक जयंती महोत्सव के रूप में भव्य उत्साह एवं उमंग के साथ मनाया गया। गुरूवर्या श्री का अभिनंदन अतिथि पद्म श्री अभयजी छजलानी, चन्दनमलजी चोरड़िया, अध्यक्ष प्रकाशजी मालू, विमलचन्द्रजी छजलानी ने किया। दि. 6 फरवरी को दादावाडी जीर्णोद्वार का शिलान्यास किया गया शिलान्यास के मुख्य लाभार्थी श्रीमति सरलाबाई, अभय कुमारजी लूनिया परिवार, श्रीमान मुकनचन्दजी उमराव कंवरजी मेहता, श्रीमान प्रकाशजी महेन्द्रजी परिवार एवं श्रीमान लखनलालजी कांतीलालजी हेमन्तजी लसोड परिवार रहे। शिलान्यास में मार्गदर्शक सिरोही निवासी शासन रत्न श्री मनोज कुमारजी, बाबुमलजी हरण रहे। प.पू. उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभ सागरजी द्वारा दिये गये मुहुर्त में शिलान्यास किया गया।

कोयम्बतूर में मंदिर दादावाडी की प्रतिष्ठा संपन्न

तमिलनाडु के कोयम्बतूर नगर में श्री विजयराजजी सौ. पारसमणि देवी पुत्र कुशलराज झाबक परिवार द्वारा स्वद्रव्य से निर्मित श्री स्तंभन पार्श्वनाथ जिन मंदिर एवं श्री जिनदत्तसूरि दादावाडी की अंजनशलाका प्रतिष्ठा पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म.सा. एवं पूजनीया महत्तरा साध्वी श्री मनोहरश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री तरूणप्रभाश्रीजी म. सुमित्राश्रीजी म. प्रियमित्राश्रीजी म. मधुस्मिताश्रीजी म. एवं पूजनीया महत्तरा श्री चंपाश्रीजी म. जितेन्द्रश्रीजी म. की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. विश्वरत्नाश्रीजी म. रश्मिरेखाश्रीजी म. चारूलताश्रीजी म. मयूरप्रियाश्रीजी म. चारित्रप्रियाश्रीजी म. तत्वज्ञलताश्रीजी म. संयमलताश्रीजी म. आदि के पावन सानिध्य में परम भक्ति भावना के वातावरण में संपन्न हुई।

प्रतिष्ठा महोत्सव का प्रारंभ ता. 29 जनवरी को कुंभ स्थापना से हुआ। ता. 30 को पूज्यश्री मंगल प्रवेश हुआ। च्यवन कल्याणक आदि विधान संपन्न किये गये।

शास्त्रीय आधार पर समस्त कल्याणकों के विधान मंदिरजी में ही किये गये। ता. 1 फरवरी को भव्य वरघोडा संपन्न हुआ। ता. 2 फरवरी को मंगल मुहूर्त्त में परमात्मा स्तंभन पार्श्वनाथ, दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरि, नाकोडा भैरव, घंटाकर्ण महावीर, श्री अंबिका देवी, श्री सरस्वती देवी, श्री काला गोरा भैरव, श्री पार्श्व यक्ष एवं श्री पद्मावती देवी की प्रतिष्ठा की गई। इस प्रतिष्ठा महोत्सव की यह विशिष्टता रही कि किसी भी प्रकार की कोई बोली नहीं बोली गई।

जैसलमेर के पीत पाषाण में उत्तम कोरणी युक्त इस जिन मंदिर में केवल पार्श्वनाथ परमात्मा की एक ही खडी विशाल प्रतिमा बिराजमान की गई। दादावाडी में ध्यान-मुद्रा में दादा जिनदत्तसूरि की मनोहारी प्रतिमा बिराजमान की गई। परमात्मा व गुरुदेव की केवल एक एक प्रतिमा ही बिराजमान की गई।

जिन मंदिर के पास ही दादावाडी का निर्माण हुआ है। इस मंदिर दादावाडी में 10 हजार से अधिक घन फीट पाषाण लगा। इसका निर्माण मात्र चार महिने में किया गया। श्री विजयराजजी सौ. पारसमणि देवी, पुत्र कुशलराज, जामाता संजयजी गुलेच्छा ने इस मंदिर दादावाडी के निर्माण में रात दिन एक किया। पूज्यश्री ने स्फटिक रत्न मय दादा गुरुदेव की दिव्य प्रतिमा श्री झाबकजी को साधना के लिये भेंट की। बाहर से बडी संख्या में अतिथियों का आगमन हुआ। झाबक परिवार ने स्वद्रव्य से जिनमंदिर व दादावाडी का निर्माण किया व प्रतिष्ठा का पूरा लाभ लिया।

ता. 3 फरवरी को द्वारोद्घाटन हुआ। दादा गुरुदेव की पूजा पढाई गई।

पेढी की जनरल बैठक संपन्न

श्री जिनदत्त-कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढी की आम बैठक ता. 27 फरवरी को पूज्य उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की पावन निश्रा में कन्याकुमारी में पेढी के अध्यक्ष माननीय श्री मोहनचंदजी ढड्ढा की अध्यक्षता में संपन्न हुई। जिसमें वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। बैठक में बडी संख्या में माननीय सदस्य उपस्थित थे।

इस अवसर पर द्वितीय दादा गुरुदेव श्री जिनचन्द्रसूरि की जन्मभूमि विक्रमपुर, चतुर्थ दादा गुरुदेव श्री जिनचन्द्रसूरि की जन्म भूमि खेतासर में दादावाडी बनाने का निश्चय किया गया।

भडगतिया परिवार द्वारा मेडता सिटी की प्राचीन दादावाडी के जीर्णोद्धार हेतु संघवी श्री विजयराजजी डोसी को उत्तरदायित्व सौंपा गया।

पेढी का लोगो तय किया गया। दादावाडियों के जीर्णोद्धार हेतु आये निवेदन पत्रों पर विचार किया गया। उनके द्वारा पूरी जानकारी प्राप्त करके राशि भेजने का निर्णय किया गया।

गांगाणी तीर्थ के चुनाव सम्पन्न

जोधपुर-जयपुर नेशनल हाईवे मार्ग पर स्थित प्राचीन तीर्थ गांगाणी में 15 फरवरी को ट्रस्ट मण्डल के सम्पन्न हुए। चुनाव में नवगठित ट्रस्ट मण्डल में अध्यक्ष पद के लिए राजेन्द्र कुमार कुम्भट जोधपुर, उपाध्यक्ष पद के लिए मूलचंद कोठारी फलौदी, सचिव पद के लिए अनिल भण्डारी जोधपुर, सहसचिव पद के लिए उगमराज बिलाडा, कोषाध्यक्ष पद के लिए संतोष जैन जोधपुर, सहकोषाध्यक्ष पद के लिए ललित सुंदेशा जोधपुर सर्वसहमति से निर्वाचित हुए।

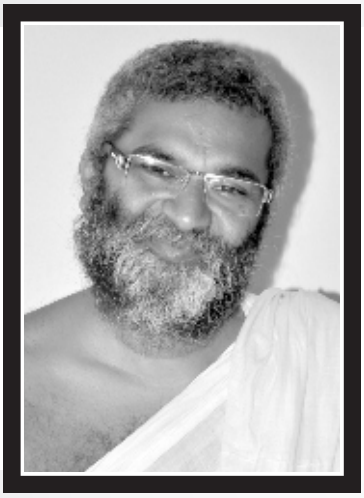

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर मरुधर मणि

श्री मणिप्रभसागरजी म. सा.

के 56 वें वर्ष प्रवेश पर जन्म दिन की

4 मार्च 2015

हार्दिक शुभकामनाएँ...अभिवंदना....अभिनंदना...

ज्यों बादल उमड़-घुमड़ आये,
धरती की प्यास बुझाने को,
त्यों हुआ आगमन सद्गुरू का,
भक्तों पे प्रेम लुटाने को।।

श्रद्धावंत

पृथ्वीराज ममता, अमित शिप्रा भव्य आरणा चिनारिया, नोएडा

With best compliment sfrom :

संघवी अशोक एम. भंसाली

M.A.ENTERPRISES

Mfrs. of Stainless Steel Sheet (Patta-Patti)

FACT. & ADMINISTRATIVE OFFICE :
508, G.I.D.C. Industrial Estate,
Mehdabad Highway Road,
Phase IV, VATVA,
AHMEDABAD - 382 445
Tel. : 91-79-25831384, 25831385
Fax : 91-79-25832261
Email : maenterprisesadi@gmail.com
enquiry@ma-enterprises.com
Website : www.ma-enterprises.com

कोयम्बत्तूर प्रतिष्ठा की झलकियाँ

कन्याकुमारी प्रतिष्ठा की झलकियाँ

ब्रह्मसर में
ढाढा मेले पर
ध्वजारोहण

श्री व्यापारीलालजी

गोदावरीदेवी

अंजुदेवी-रतनलाल,
कान्तादेवी-विनोदकुमार,
मंजुदेवी-गौतमकुमार,
मीनादेवी-पारसमल,
कंचनदेवी-सुरेशकुमार (पुत्र-पुत्रवधु),
मौनादेवी-हितेशकुमार, रुपलदेवी-सुशीलकुमार
(पौत्र-पौत्रवधु), हिम्मतकुमार, विवेक,
वंदन, विपुल, रौनक (पौत्र),
भव्या, तनिषा (पौत्री),
कमलादेवी-सरदारमलजी चौपड़ा
(बहिन)

प्रतिष्ठान

रतनलाल गौतमकुमार
बोहरा ब्रदर्स

403, 603, Safal Flora,
Godha caup Road, Shahibag,
Ahmedabad - 380004
(R) 079-22680300, 22680460
(M) 09327002606, 09924477723

श्रीमती गोदावरीदेवी व्यापारीलालजी बोहरा (हालावाला) परिवार
रतनलाल व्यापारीलालजी बोहरा
8, शाहीकुटीर, शाहीबाग, अहमदाबाद-380 004.
टेली. : (079) 22869300

नागपुर का प्रभावशाली प्रवास

परम पूजनीया आगम ज्योति स्व. प्रवर्तिनी श्री प्रमोदश्रीजी म.सा. की सुशिष्या पूजनीया माताजी म. साध्वी श्री रतनमाला श्रीजी म.सा. पूजनीया बहिन म. साध्वी डॉ. श्री विद्युत्प्रभा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा 11 की पावन निश्रा में 9 फरवरी 2015 को महाराष्ट्र के प्रमुख शहर नागपुर नगर में इन्दोरा दादावाडी का ध्वजारोहण समारोह अत्यन्त आनंद एवं उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

ध्वजारोहण समारोह में अपनी निश्रा प्रदान करने के लिये पूज्यवर्या श्री बहिन म.सा. अपने साध्वी मंडल के साथ वर्द्धमान नगर से प्रातः विहार करके 8:00 बजे कमाल चौक में देव ज्वेलर्स इन्दोरा पधारे। जहाँ से वरघोडे के साथ दादावाडी में पदार्पण हुआ। रिमझिम फुहारों से पुलकित वातावरण में सतरह भेदी पूजा पढायी गयी। ध्वज पूजा के संगान के साथ अलौकिक पार्श्वनाथ, दादा श्री जिनकुशलसूरि गुरूदेव एवं घंटाकर्ण महावीर की ध्वजा का विजय मुहूर्त्त में आरोहण किया गया, जिसका लाभ क्रमशः श्रीमति शांति देवी उपेकचंदजी कोठारी, प्रेमचंदजी राकेश कुमार जी कोठारी, फतेहचंदजी देवेन्द्र कुमारजी कोठारी ने लिया।

ध्वजारोहण से पूर्व नवकारशी एवं दोपहर में स्वामिवात्सल्य का लाभ भी ध्वजा के लाभार्थी परिवार ने ही लिया।

इसी क्रम में 10 फरवरी को पारडी-नागपुर में जिनालय एवं दादावाडी का ध्वजारोहण भी पूज्यवर्या की निश्रा में सम्पन्न हुआ, जिसमें वर्द्धमान स्वामी की ध्वजा का लाभ निर्मला देवी ताराचंदजी कोठारी एवं दादागुरूदेव की ध्वजा का लाभ विरधीचंदजी प्रकाशचंदजी चौरडिया परिवार ने लिया। पारडी के इस समारोह में पू. प्रशमरति विजयजी म. ने भी सान्निध्यता प्रदान की।

ज्ञातव्य है कि पू. बहिन म.सा. का 28 जनवरी को रामदास पेठ से नागपुर प्रवास प्रारंभ हुआ था, जो इतवारी, वर्द्धमान नगर, छावनी आदि में विशिष्ट प्रभावी प्रवचनों की श्रृंखला के साथ पारडी ध्वजारोहण करवाते हुए संपूर्ण हुआ।

पूज्यवर्या श्री बहिन म.सा. के दार्शनिक एवं आध्यात्मिक प्रवचनों की नागपुर में खूब चर्चा रही।

इस प्रवास को सफल एवं स्मरणीय बनाने में संघ अध्यक्ष प्रभातजी धाडीवाल, इन्द्रचंदजी सावनसुखा, आसारामजी नाहटा, सुरेशजी पारख, नथमलजी कोठारी, प्रेमचंदजी कोठारी, देवेन्द्रजी कोठारी, अशोकजी कोचर, रूपेशजी गुलेच्छा, घनश्यामजी कोचर, राजेशजी नाहटा, विनोदजी कोठारी, फुलजी कोठारी, किशोरजी कोठारी, विजयजी धाडीवाल, राकेश कोठारी आदि का अनुमोदनीय सहयोग रहा। पूज्याश्री नागपुर से विहार कर 23 फरवरी तक कैवल्यधाम, रायपुर पधारेंगे, जहाँ 10 दिवस की स्थिरता के पश्चात् छत्तीसगढ में विचरण करेंगे।

प्रेषक : दीपिका K.पालरेचा

कैवल्यधाम में दीक्षा एवं भूमिपूजन

छत्तीसगढ के सुप्रसिद्ध तीर्थ कैवल्यधाम में पूज्य अध्यात्मयोगी मुनि श्री महेन्द्रसागरजी म. आदि ठाणा एवं पूजनीया मरूधर ज्योति साध्वी श्री मणिप्रभाश्रीजी म.सा. आदि की पावन निश्रा में जगदलपुर निवासी श्री केशरीचंदजी पारख एवं राजनांदगांव निवासी श्री प्रभातकुमारजी ममता जी कोटडिया की सुपुत्री कुमारी प्रगति कोटडिया की भागवती दीक्षा ता. 2 मार्च 2015 को संपन्न हुई।

श्री पारख का नया नाम मुनि श्री प्रशांतसागरजी म. रखा गया। जबकि कुमारी प्रगति का नाम साध्वी श्री प्रसन्नमनाश्रीजी म. रखा गया।

साथ ही कैवल्यधाम के पास विचक्षण विद्यापीठ का शिलान्यास संपन्न हुआ। इस पावन अवसर पर पूजनीया साध्वी श्री मंजुलाश्रीजी म. आदि ठाणा एवं पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म. पू. बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा की पावन उपस्थिति थी।

कन्याकुमारी में ऐतिहासिक प्रतिष्ठा संपन्न

भारत के दक्षिणी अन्तिम छोर पर स्थित पर्यटन स्थल श्री कन्याकुमारी नगर में परमात्मा श्री महावीर स्वामी का जिन मंदिर, श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी एवं श्री राजेन्द्रसूरि गुरु मंदिर का अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरूष आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य गुरुदेव मरूधर मणि उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री अध्यात्मप्रभसागरजी म. ठाणा 3 एवं पूजनीया महत्तरा श्री चंपाश्रीजी म.सा. जितेन्द्रश्रीजी म. की शिष्या पूजनीया धवलयशस्वी साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म.सा. पू. श्री विश्वरत्नाश्रीजी म. पू. श्री रश्मिरेखाश्रीजी म. पू. श्री चारूलताश्रीजी म. पू. श्री चारित्रप्रियाश्रीजी म. ठाणा 5 एवं पूजनीया खान्देश शिरोमणि साध्वी श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री विरागज्योतिश्रीजी म. पू. श्री विश्वज्योतिश्रीजी म. पू. श्री जिनज्योतिश्रीजी म. ठाणा 3 की पावन सानिध्यता में अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ।

प्रतिष्ठा महोत्सव का प्रारंभ ता. 24 फरवरी 2015 को कुंभस्थापना के साथ हुआ। ता. 26 को भव्य शोभायात्रा का आयोजन हुआ। ता. 27 को परमात्मा की प्रतिष्ठा शुभ मुहूर्त्त में संपन्न हुई।

संगीतकार श्री नरेन्द्र वाणीगोता ने भक्ति भावना का अनूठा माहौल उपस्थित किया। युवा संगीतकार रायपुर निवासी अंकित लोढा ने भक्ति का रंग जमाया। विधिकारक श्री अश्विन भाई बैंगलोर ने शुद्धता के साथ विधि विधान कराया।

प्रतिष्ठा महोत्सव को सफल बनाने में ट्रस्टीगणों के साथ नागरकोइल संघ, तिरूनेलवेली संघ व मदुराई संघ का विशेष योगदान रहा। साथ ही इन संघों के विविध मंडलों ने पूरी सेवाऐं अर्पण की। पूज्यश्री आदि साधु साध्वियों के विहार की वैयावच्च में इन तीनों संघों के साथ साथ चेन्नई निवासी श्री प्रकाशजी लोढा की सेवाऐं अत्यन्त अनुमोदनीय रही। वे 11 फरवरी से निरन्तर विहार में साथ रहे।

मुख्य ध्वजा का लाभ संघवी श्री शांतिदेवी पुखराजजी तेजराजजी गुलेच्छा परिवार मोकलसर निवासी ने लिया। मूलनायक परमात्मा श्री महावीर स्वामी को बिराजमान का लाभ श्री मोहनचंदजी प्रदीपकुमारजी ढड्ढा परिवार ने लिया। शिखर पर कलश का लाभ गोल-तिरूवनवेली निवासी श्री जीतमलजी तलावट परिवार ने लिया।

दादावाडी की ध्वजा का लाभ श्री हीराचंदजी बबलासा. जिनराजजी गुलेच्छा परिवार बीकानेर टिन्डीवनम् वालों ने लिया। जबकि कलश का लाभ श्री भंवरलालजी विरधीचंदजी छाजेड परिवार बाडमेर मुंबई वालों ने लिया। दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरि को बिराजमान का लाभ संघवी शा. पारसमलजी चौथमलजी वंसराजजी अशोककुमारजी भंसाली

परिवार सिवाना वालों ने लिया।

श्री राजेन्द्रसूरि गुरु मंदिर की ध्वजा एवं मुख्य कलश का लाभ श्री बगदावरमलजी हरण परिवार भीनमाल वालों ने लिया। एवं बिराजमान का लाभ श्री मांगीलालजी हरकचंदजी आलासन वालों ने लिया।

श्री नाकोडा भैरव को बिराजमान का लाभ गोल- उम्मेदाबाद- मदुराई निवासी श्री भंवरलालजी भंसाली परिवार भैरू लाइट हाउस ने लिया। श्री अंबिका देवी को बिराजमान का लाभ श्री भीमराजजी शंकरलालजी बागरेचा आहोर-चेन्नई वालों ने लिया।

प्रतिष्ठा के बाद पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री एवं साध्वीजी म. को कामली ओढाई गई। कामली का लाभ श्री मोहनचंदजी प्रदीपकुमारजी ढड्ढा परिवार ने लिया। जबकि गुरु पूजन का लाभ श्री जवाहरलालजी देशरला परिवार ने लिया।

प्रतिष्ठा के पश्चात् आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म. ने जीवन की मूल्यवत्ता का वर्णन किया।

इस अवसर पर श्री जैन तीर्थ संस्थान द्वारा श्री मोहनचंदजी ढड्ढा का भावभीना अभिनंदन किया गया। साथ ही समय और अपनी क्षमताओं का पूरा भोग देने वाले श्री राजेश गुलेच्छा का बहुमान किया गया।

इस अवसर पर पूज्यश्री ने कहा- श्री मोहनचंदजी हमारे समाज के सबसे युवा व्यक्तित्व है। उनकी कार्यशैली अनूठी है। कोडैकनाल, रामदेवरा में जिन मंदिरों का निर्माण और उसी कडी में कन्याकुमारी में मंदिर निर्माण आपकी कर्तत्व शक्ति का उदाहरण है।

कन्याकुमारी में प्रारंभ में अत्यन्त प्रतिकूल परिस्थितियाँ होने पर भी आपने दृढता के साथ उन पर विजय प्राप्त करके इस निर्माण को पूर्ण किया।

इस अवसर पर देश के कोने कोने से संघ व श्रद्धालुओं का आगमन हुआ। हर व्यक्ति ने आवास व भोजन आदि की सुव्यवस्थाओं की भूरि भूरि अनुमोदना की।

इतिहास

श्री जैन तीर्थ संस्थान (रामदेवरा), चेन्नई के तत्वावधान में इस मंदिर का निर्माण हुआ है।। मंदिर का निर्माण मात्र 6-7 महिने में संपन्न हुआ। यहाँ जिन मंदिर बने, ऐसा भाव वर्षों से कई संघ, साधु साध्वीजी भगवंतों का था। श्री कन्याकुमारी जैन चेरिटेबल ट्रस्ट, मदुरै के मेनेजिंग ट्रस्टी श्री बगदावरमलजी हरण के माध्यम से यह विशाल भूखण्ड ट्रस्ट को प्राप्त हुआ। भूखण्ड प्राप्ति के प्रयास में मोकलसर निवासी श्री सुरेशकुमारजी श्रीमाल मदुरै वालों का पूर्ण सहयोग रहा। सरकारी समस्याओं के निराकरण में चेन्नई माइनोरिटी कमीशन के माननीय सदस्य, उदीयमान युवा व्यक्तित्व श्री सुधीरकुमारजी लोढा के अथक प्रयास रहे। इस भूखण्ड पर आराधना भवन, धर्मशाला, भोजनशाला आदि का प्रारंभ 10 जुलाई 2013 को किया गया। जिन मंदिर का शिलान्यास ता. 14 मार्च 2014 को किया गया।

शिलान्यास के बाद परिस्थितियों के कारण कुछ समय कार्य नहीं हो पाया।

उसके बाद लगातार कार्य चला। चेन्नई निवासी श्री राजेशजी गुलेच्छा ने इसके लिये अथक प्रयास किये। फलस्वरूप जिन मंदिर का कार्य शीघ्र ही पूर्ण हो पाया।

इतिहास

चातुर्मास निर्णय

पूज्य उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म. आदि ठाणा	रायपुर
पूज्य मुनि श्री मयंकप्रभसागरजी म. आदि ठाणा	पालीताना
पू. साध्वी श्री मणिप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	रतलाम
पू. साध्वी श्री शशिप्रभाश्रीजी म.	सिवाना
पू. साध्वी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	हॉस्पेट
पू. साध्वी श्री सुलक्षणाश्रीजी म.	बाडमेर
पू. माताजी म. साध्वी श्री रतनमालाश्रीजी म.सा.	
पू. बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	रायपुर
पू. साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	चेन्नई धर्मनाथ मंदिर
पू. साध्वी श्री सुरंजनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	सूरत
पू. साध्वी श्री सम्यग्दर्शनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	बैंगलोर
पू. साध्वी श्री तरूणप्रभाश्रीजी म.	चेन्नई वडपलनी
पू. साध्वी श्री लयस्मिताश्रीजी म.	सांचोर
पू. साध्वी श्री हेमरत्नाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	मुंबई
पू. साध्वी श्री मंजुलाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	कटंगी
पू. साध्वी श्री विराग-विश्वज्योतिश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	चेन्नई धोबीपेठ
पू. साध्वी श्री प्रियसौम्यांजनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	अंजार कच्छ
पू. साध्वी श्री कल्पलताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	गांधीधाम
पू. साध्वी श्री श्रद्धांजनाश्रीजी म.	उदयपुर
पू. साध्वी श्री सुरेखाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	इन्दौर
पू. साध्वी श्री स्नेहयशाश्रीजी म.	जोधपुर
पू. साध्वी श्री संघमित्राश्रीजी म.	भुज

पू. साध्वी गुरूवर्या श्री हेमप्रभाश्रीजी म. की प्रेरणा से निर्मित

श्री मुनिसुव्रतस्वामी मंदिर दादावाडी तीर्थ से सुशोभित

श्री जिनकुशल हेम विहारधाम

जोधपुर-जालोर मुख्य मार्ग पर, जोधपुर से 90 कि.मी., जालोर से 50 कि.मी.।
आवास भोजन की सुन्दर व्यवस्था। दर्शन, पूजा हेतु अवश्य पधारें।

निवेदक- शा. केवलचन्दजी छोगालालजी संकलेचा परिवार

संपर्क- 099784 02271, 099505 22754

तिरपात्तुर में पावन-प्रवास

पू. उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के शिष्य पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. सा. पू. मुनि समयप्रभसागरजी म. पू. मुनि श्रेयांसप्रभसागरजी म. का लगभग पांच साप्ताहिक प्रवास रहा।

पूज्य मुनिश्री के प्रवचनों का सुन्दर माहौल बना। शुरू के सप्ताह में सम्यक्त्व एवं मिथ्यात्व पर मर्मभेदी प्रवचन चले। दूसरे सप्ताह **ऋषभ जिनेश्वर प्रीतम माहरो'** स्तवन की व्याख्या तथा प्रभु भक्ति की रसधार बही। तीसरे सप्ताह **'मन के मालिक कैसे बने'** पर मननीय चिन्तन हुआ। चौथे सप्ताह विविध विषय तथा अन्तिम दस दिवस खरतरगच्छ के प्रभावक आचार्य एवं शास्त्रीय सिद्धान्तों को मधुर वातावरण बना।

प्रतिदिन दोपहर 3 बजे से 4 बजे तक तत्वज्ञान शिविर में जैन जीवन, जैन सिद्धान्त, जैन आचार, जैन तत्त्व, जैन क्रिया आदि का प्रशिक्षण प्रदान किया गया, जिसमें सुन्दर उपस्थिति रही। शिविर में हृदयस्पर्शी भजनों को सीखकर मन अत्यन्त उल्लासित बना। युक्ता कवाड तथा गौरव कवाड ने एक सुन्दर नाटिका प्रस्तुत की जिसे सभी ने सराहा। श्रावक जीवन के बारह व्रतों की शिक्षा दी गयी जिससे अनेक श्रावकों ने व्रत अंगीकार किये। बालकों ने सामायिक गौचरी सामायिक करके कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया। रविवार को संध्या भक्ति का बहुत खूब वातावरण बना। दिनांक 18 फरवरी 2015 फाल्गुन सुदि अमावस को दादा जिनकुशलसूरि महाराज की 682 वीं पुण्यतिथि पर गुणानुवाद सभा का आयोजन हुआ जिसमें पू. मुनि मनितप्रभसागरजी म. मुनि समयप्रभसागरजी म. मुनि श्रेयांसप्रभसागरजी म. ललित कवाड, खुशाल जी गुलेच्छा, प्रफुल्ल कवाड ने अपने भाव व्यक्त करते हुए दादा गुरुदेव की महिमा गायी। सोनी- पायल कवाड ने गीतिका प्रस्तुत की। पू. मनितप्रभसागरजी म. ने श्रद्धा सुमन अर्पण करते हुए कहा-गुरूदेव ने जैन बनाये यह बहुत बडी बात है। प्रश्न यह करे कि आज हम जैन कैसे बने रहे। आज संस्कृति पर विकृतियों का जो हमला हो रहा है, वह चिन्ता का विषय है। सबसे पैदल संघ भी गुरूदेव ने निकाला जो दिल्ली से शत्रुजय-गिरनार के लिये आयोजित था। निश्चित ही तिरूपात्तुर यह प्रवास सभी के स्मरणीय बन गया। पूज्य मुनि श्री 19 फरवरी को संघ ने भरी आँखों से विदायी दी।

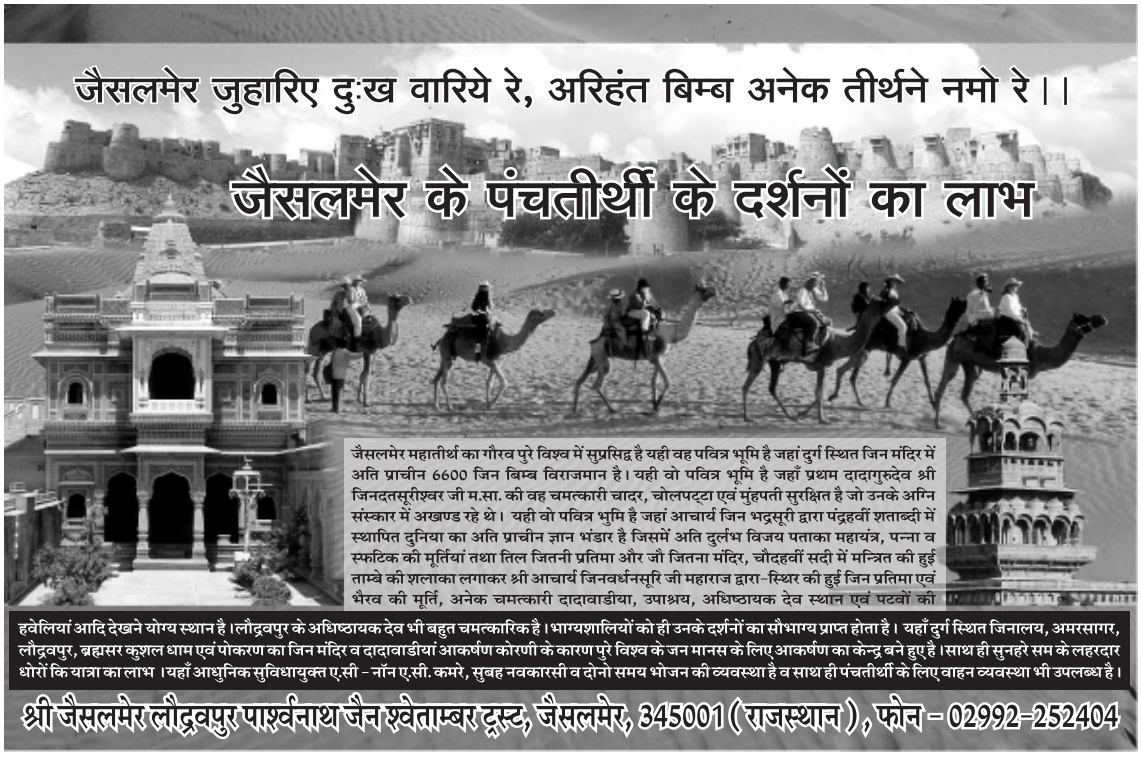

दो पुस्तको का विमोचन सम्पन्न

Life management- पू. मुनि मनितप्रभसागरजी द्वारा आलेखित English life management के विमोचन का लाभ श्री महेन्द्रकुमारजी ललितकुमारजी रांका परिवार द्वारा लिया गया।

रिलीजन मेनेजमेंट- पू. मुनिश्री द्वारा लिखित रिलीजन मेनेजमेंट का विमोचन 6666 सामायिक में श्री पन्नालालजी गौतमचंदजी पुखराजजी कवाड परिवार द्वारा किया गया।

COMING SOON

समस्या, समाधान और सन्तुष्टि- पू. मुनिवर्य श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. द्वारा संकलित-संयोजित- आलेखित जो प्रश्नोत्तर महाग्रन्थ समस्या समाधान और सन्तुष्टि प्रकाशित हो रहा है, वह प्यासा कठ मीठा पानी नामक बहुचर्चित ग्रंथ का द्वितीय खण्ड है। 600 से अधिक पृष्ठों में 15000 से अधिक प्रश्नोत्तर प्रमाण अनेकानेक सामग्रियाँ इसमें डाली गयी है जैसे त्रिषष्ठि शलाका पुरूष, खरतरगच्छ, तत्त्व, दर्शन, साहित्य, इतिहास, विज्ञान, ज्योतिष आदि। यह ग्रन्थ हर घर में सहेजने योग्य है। मूल्य मात्र 200 रू. रखा गया है।

जैन जीवन शैली (गुजराती)- पू. मुनिश्री मनितप्रभसागरजी म.सा. की ज्ञान साधना का सहज परिणाम है- जैन जीवन शैली। हिन्दी भाषा में श्वेत-श्याम एवं रंगीन में 9000 से अधिक प्रतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं, यह इस इस मूल्यवान ग्रन्थराज की उपयोगिता एवं मूल्यवत्ता का पुष्ट प्रमाण है। लोकोपयोगी इस ग्रन्थ का अब गुजराजी संस्करण प्रकाशित हो रहा है। गुजराती भाषा में सुंदर अनुवाद कार्य किया है- पारूल बेन गांधी-राजकोट ने। यह पुस्तक 150 रूपये में उपलब्ध रहेगी जबकि पक्की जिल्द वाली यह बुक 300 पृष्ठ संख्या प्रमाण है।

गणधर गौतम स्वामी- जैन वाडमय में गुरू गौतम स्वामी अत्यन्त श्रद्धा के केन्द्र है। उनका जीवन, प्रेरणा का मूल्यवान खजाना है। विनम्रता, सरलता और सहजता जैसे गुणों से अलंकृल गौतम स्वामी की भव्य कथा का सुन्दर, सहज, सरल एवं सजीव शैली में लेखन किया है- मुनिप्रवर श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. ने 200 से अधिक पृष्ठों वाली यह पुस्तक 50 रूपये में उपलब्ध रहेगी।

Life management - पू. मुनिश्री मनितप्रभसागरजी म.सा. द्वारा लिखित प्रसिद्ध पॉकेट कृति जीवन प्रबंधन अब English में भी उपलब्ध है। रंगीन चित्र-आकृति से युक्त इस बुक का मूल्य मात्र 20 रूपये रखा गया है।

रिलीजन मेनेजमेंट- पू मुनिश्री मनितप्रभसागरजी म.सा. के धर्म चिन्तन का परिणाम है-धर्मप्रबंधन परमात्मा महावीर का द्वारा प्ररूपित सिद्धान्तों को व्यवहार में कैसे जीवंत करे, इसकी व्याख्या वाली रंगीन रिलीजन मेनेजमेन्ट बुक का मूल्य मात्र 20 रू है।

श्रावकाचार- पू. मुनिश्री मनितप्रभसागरजी म.सा. की लेखनी निरन्तर प्रवाहित है। श्रावक जीवन के बारह व्रत एवं चौदह नियमों की विधि एवं विवेचना बताने बाली श्रावकाचार पुस्तक का यह द्वितीय संस्करण है। लगभग 175 पृष्ठ वाली पुस्तक पठनीय-मननीय है।

सारी पुस्तकें जहाज मंदिर माण्डवला एवं श्री जिनहरि विहार-पालीताणा पर उपलब्ध रहेगी।

संपर्क- जहाज मंदिर- 096496-40451, पालीताणा- 02848-252653

दादा गुरूदेव की प्रतिष्ठा सम्पन्न

पू. गुरूदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के शिष्य पूज्य मुनिवर श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. पू. मुनि श्री समयप्रभसागरजी म. पू. मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. की पावन निश्रा में बेंगलोर में बसवनगुडी दादावाडी में जिनकुशलसूरि दादागुरूदेव की दो प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा 2 मार्च 2015 को शुभ मुहूर्त में सम्पन्न हुई।

कार्यक्रम का प्रारंभ 1 मार्च से हुआ। इस दिन अठारह अभिषेक का विधान सम्पन्न हुआ। रात्रि में विक्की पारख द्वारा प्रभुभक्ति का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

2 मार्च को पूज्य मुनिवरश्री ने प्रवचन में खरतरगच्छ की महिमा पर उद्‌बोधन देते हुए कहा- अतिशीघ्र अपना गच्छ 1000 वर्ष की लम्बी यात्रा गौरव के साथ सम्पन्न कर रहा है। विक्रम संवत 1075 में जिनेश्वरसूरि से प्रारंभ हुई यह परम्परा परमात्मा की आज्ञा, शास्त्र, शासन एवं आत्मा को समर्पित रही है। खरतरगच्छ महान् शासन प्रभावक आचायों की सुदीर्घ कडी है। तीर्थ रक्षा, श्रुत लेखन, ज्ञान भण्डार स्थापना, जैन निर्माण, व्यसन मुक्ति, शासन वृद्धि के लिये जो काम किये हैं, उस पर चार माह तक प्रवचन दे तो भी समय कम पड़ेगा।

अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ पावन मुहूर्त में दादागुरू की प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। प्राचीन दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरीश्वरजी की मूर्ति भराने का लाभ संघवी श्री घेवरचंदजी शंकरलालजी साकरिया परिवार सांडेराव, बैंगलोर एवं इसी मूर्ति को विराजमाने कारने का लाभ छगनलालजी आनंदजी श्री श्रीमाल एवं नूतन दादा श्री जिनकुशलसूरीश्वरजी म.सा. की प्रतिमा भराने का लाभ जयकुमार जी कांकरिया ने प्राप्त किया। इसी दिन दादागुरूदेव की पूजा सम्पन्न हुई। जय जिनेन्द्र का लाभ श्रीमान् पन्नालालजी गौतमचंदजी कवाड़ परिवार बैंगलोर-तिरुपात्तुर-फलौदी वालों ने लिया। स्वामीवात्सल्य का लाभ में गौतम ग्राफिक्स बैंगलोर के श्री दिलीप कुमार गौतमकुमारजी ललवाणी परिवार गढ़ सिवाना ने लिया। 3 मार्च को पूजन आदि विधान सम्पन्न हुए।

साधु साध्वी समाचार

पूज्य ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक बकेला तीर्थोद्धारक मुनि श्री मनोज्ञसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री नयज्ञसागरजी म.सा. जैसलमेर होते हुए ब्रह्मसर पधारे। जैसलमेर संघ ने उनका नगर प्रवेश ठाट से करवाया। तत्पश्चात् ब्रह्मसर मंदिर व दादावाडी में फाल्गुन वदि 30 को मेले का भव्य आयोजन संपन्न हुआ। इस अवसर पर बाहर से हजारों की संख्या में श्रद्धालु उपस्थित थे। मंदिर, दादावाडी की वर्षगांठ मनाई गई। पूज्यश्री होली के पश्चात् विहार कर आगोलाइ पधारेंगे। जहाँ उनकी पावन निश्रा में वासुपूज्य जिन मंदिर की प्रथम वर्षगांठ वैशाख वदि एकम को मनाई जायेगी।

पूज्य मुनि श्री मुक्तिप्रभसागरजी म. मनीषप्रभसागरजी म. फलोदी प्रतिष्ठा संपन्न करवाकर विहार कर बाडमेर पधारे।

जहाँ उनकी निश्रा में फाल्गुन सुदि 5 को कल्याणपुरा पार्श्वनाथ प्रभु के मंदिर की प्रथम वर्षगांठ मनाई गई। ध्वजा चढाई गई। वहाँ से पूज्यश्री विहार कर सनावडा, बाछडाउ होते हुए धोरीमन्ना पधारे हैं। वहाँ से सांचोर होते हुए कच्छ की ओर विहार करेंगे।

पूज्य मुनि श्री मयंकप्रभसागरजी म. मेहुलप्रभसागरजी म. सा. अध्ययन हेतु पालीताना श्री जिन हरि विहार धर्मशाला में बिराजमान है।

पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. समयप्रभसागरजी म. श्रेयांसप्रभसागरजी म. की पावन निश्रा में श्री विमलनाथ जिन मंदिर दादावाडी में एक देवकुलिका में दादा गुरूदेव श्री जिनकुशलसूरि की प्रतिष्ठा 2 मार्च को संपन्न हुई। वहाँ से 3 मार्च को विहार किया है। वे अम्बूर तिन्नपट्टी पधारेंगे, जहाँ उनकी निश्रा में ता. 12 मार्च को प्रतिष्ठा संपन्न होगी। वहाँ से पूज्यश्री चेन्नई की ओर विहार करेंगे।

पूजनीया मरूधर ज्योति साध्वी श्री मणिप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा कैवल्यधाम बिराज रहे हैं। लगभग 9 मार्च के पश्चात् मध्यप्रदेश की ओर विहार करेंगे।

पूजनीया पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका साध्वी श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा ता. 2 मार्च तक विजयवाडा पधार गये हैं। यहाँ से विहार कर काकटूर तीर्थ पधारेंगे, जहाँ चैत्र मास की नवपदजी की ओली की आराधना करायेंगे। वहाँ से चेन्नई की ओर विहार करेंगे।

पूजनीया मारवाड ज्योति साध्वी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा. पूर्णप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा गदग विराज रहे हैं। पूजनीया श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा. के पथरी की शल्य चिकित्सा होगी।

पूजनीया महातपस्वी साध्वी श्री सुलक्षणाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा जयपुर बिराज रहे हैं। होली पश्चात् अजमेर, ब्यावर, जोधपुर होते हुए फलोदी पधारेंगे।

पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म.सा., पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. ठाणा कैवल्यधाम बिराज रहे हैं।

पूजनीया धवल यशस्वी साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 5 कन्याकुमारी से विहार कर नागरकोइल, तिरूनेलवेली होते हुए 14 मार्च तक मदुराई पधारेंगे।

पूजनीया साध्वी श्री तरूणप्रभाश्रीजी म. सुमित्राश्रीजी म.सा. ठाणा 4 कोयम्बतूर से विहार कर तिरूपुर, ईरोड, सेलम पधारे हैं। अम्बूर के पास तिन्नपट्टी में 12 मार्च को होने वाली प्रतिष्ठा में अपनी सानिध्यता प्रदान करेंगे।

पूजनीया साध्वी डॉ. श्री सौम्यगुणाश्रीजी म.सा. ठाणा 4 ने श्री नाकोडाजी से 28 फरवरी को जयपुर की ओर विहार किया है।

पूजनीया साध्वी श्री विरागज्योति श्रीजी म.सा. विश्वज्योतिश्रीजी म.सा. ठाणा 3 कन्याकुमारी प्रतिष्ठा पर पधारे। वहाँ से विहार कर नागरकोइल, तिरूनेलवेली होते हुए 14 मार्च तक मदुराई पधारेंगे।

पूजनीया साध्वी श्री प्रियस्मिताश्रीजी म.सा. ठाणा 7 की पावन निश्रा में होसापेटे एम. जे. नगर में दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरिजी म. की 682वीं पुण्यतिथि का भव्य आयोजन किया गया। वहाँ से विहार कर हम्पी होते हुए हगरीबोम्मन हल्ली पधारे हैं। होली के पश्चात् विहार कर कोट्टूर, चित्रदुर्गा, दावणगेरे पधारेंगे।

पूजनीया साध्वी श्री हेमरत्नाश्रीजी म. आदि ठाणा 3 की पावन निश्रा में बैंगलोर नगर में तृतीय दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरि की पुण्यतिथि का आयोजन संपन्न हुआ। बैंगलोर से ता. 19 फरवरी को विहार किया है। वे ता. 4 मार्च तक अनंतपुर पधारेंगे। 4-5 दिनों की स्थिरता के पश्चात् वहाँ से बल्लारी, गंगावती, हुबली होते हुए मुंबई की ओर विहार करेंगे।

पूजनीया साध्वी श्री श्रद्धांजनाश्रीजी म.सा. दीपमालाश्रीजी म. जोधपुर से विहार कर भोपालगढ होते हुए आसोत्रा पधारे हैं।

पूजनीया साध्वी श्री प्रियश्रद्धांजना श्रीजी म.सा. ठाणा 3 पार्श्वमणि तीर्थ बिराज रहे हैं।

पूजनीया साध्वी श्री मयूरप्रियाश्रीजी म. ठाणा 3 तिरूपातूर पधार गये हैं। वहाँ से विहार कर अम्बूर के पास तिन्नपट्टी में 12 मार्च को होने वाली प्रतिष्ठा में अपनी सानिध्यता प्रदान करेंगे। वहाँ से तिरूपातूर पधारेंगे, जहाँ उनकी प्रेरणा से होने वाले सामूहिक वर्षीतप के प्रत्याख्यान 14 मार्च को करवायेंगे।

श्री पार्श्वमणि तीर्थ(पेद्दतुम्बलम) में दादा मेला सम्पन्न

18 फरवरी को आंध्रप्रदेश की धन्य धरा पर स्थित श्री पार्श्वमणि तीर्थ (पेदद्तुम्बलम्) में ''दादा मेला'' प्रकट प्रभावी तृतीय दादागुरूदेव श्री जिनकुशलसूरि जी म. सा की 682 वीं पुण्यतिथि बडी ठाटबाट से मनाई गई। भारी संख्या में दादागुरू के भक्त पधारे। प्रात: 9 बजे वरघोड़ा सम्पन्न हुआ तत्पश्चात् दादागुरूदेव की महापूजन का आयोजन रहा। दोपहर में 27 बार दादागुरूदेव के इकतीसे का जाप चला। सम्पूर्ण कार्यक्रम में संगीत का सूर देने छतीसगढ़ से अंकित लोढा पधारे। करीब 25 सौ स्कूल के बच्चों को पेन पेंसिल नोट बुक मिठाई इत्यादि का वितरण किया गया। सम्पूर्ण कार्यक्रम में प.पू. पार्श्वमणितीर्थ प्रेरिका सुलोचना श्रीजी म.सा. प.पू. सुलक्षणा श्रीजी म.सा. की सुशिष्या प.पू. डॉ. प्रिय श्रद्धांजना श्रीजी म.सा. आदि ठाणा-3। की निश्रा रही। सिन्धनुर से 4 बस का संघ लेकर पधारे शा- बाबूलालजी ललित कुमारजी भंडारी। इस मोके पर हैदराबाद, रायपुर, गदग आदि से भी बस लेकर पधारे। प.पू. प्रिय श्रद्धांजना श्रीजी म.सा. की निश्रा में 22 अप्रेल से लेकर 30 अप्रेल तक जैन सम्मर केम्प (Jain summer camp)बच्चों का शिविर का आयोजन रखा गया है। करीब 400 से 500 बच्चो को इस सम्मर केम्प में लिया जायेगा। 30 अप्रेल को अ. भा. सदा कुशल सेवा समिति द्वारा साधर्मिक भक्ति योजना का कार्यक्रम बडे रूप से किया जायेगा।

- महावीर जैन (पिटूं) , पेदद्तुम्बलम्

पूज्यश्री का कार्यक्रम

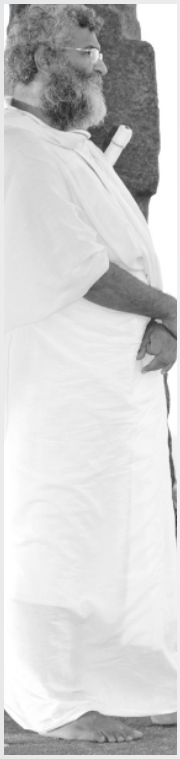

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. आदि का कन्याकुमारी से ता. 2 मार्च 2015 को विहार हुआ। वे विहार कर ता. 3 को नागरकोइल पधारे। वहाँ से विहार कर ता. 7 मार्च को तिरूनेलवेली में पधारेंगे। जहाँ श्रीमती मोवनदेवी छगनलालजी भंसाली परिवार द्वारा निर्मित श्री मनमोहन पार्श्वनाथ ज्ञान ध्यान मंदिर का उद्घाटन होगा। साथ ही उसमें नवपद पट्ट एवं दादा गुरुदेवश्री जिनकुशलसूरि व नाकोडा भैरव की प्रतिमा बिराजमान की जायेगी।

वहाँ से विहार कर पूज्यश्री ता. 14 मार्च को मदुराई पधारेंगे। जहाँ उनकी निश्रा में श्री चंदनमलजी परिवार द्वारा निर्मित गृह मंदिर में श्री विमलनाथ प्रभु की प्रतिष्ठा होगी तथा आराधना भवन के चढावे बोले जायेंगे। दो तीन दिनों की स्थिरता के पश्चात् पूज्यश्री तिरूच्चिरापल्ली, टिण्डीवनम् होते हुए चेन्नई की ओर विहार करेंगे। अप्रेल के दूसरे सप्ताह के प्रारंभ में चेन्नई पधारने की संभावना है।

संपर्क सूत्र-
पूज्य उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म. सा.
द्वारा कैलाश बी. संखलेचा
C/O NAV NIDHI ENTERPRISES
384 Mint Street, Office # 29, 2nd Floor, **CHENNAI** - 600079 TN
संपर्क - मुकेश- 09784326130/9626444966, कैलाश-094447 11097

जहाज मंदिर पहेली-105 का सही उत्तर

1. CHANDAN BALA
2. SAMVEG RANGSHALA
3. SAMRAICHCHA KAHA
4. BHADRA BAHU
5. MAHA VIDEH
6. SWAYAMBHOO RAMAN
7. DHATKI KHAND
8. CHATUR MAS
9. INDRA BHUTI GAUTAM
10. ATMA PRABODH
11- SAMAY SUNDAR
12- SAMMET SHIKHAR
13- CHULNI PITA
14- NANDISHWAR
15- BHAWANPATI
16- VISHESA VASHYAK
17- PYASA KANTH MITHA PANI
18- AVNATI SUKUMAL
19- VIKRAMA DITYA
20- VIDHI PRAPA
21- KHARTAR GACHCHH
22- STHULI BHADRA

तत्त्व परीक्षा

मुनि मनितप्रभसागरजी म.

जहाज मंदिर पहेली 106

अक्षरों की झडी, स्तवन की कडी

नीचे बिना काना, मात्रा, बिंदु बिना के अक्षर दिये गये हैं, उनमें प्रचलित प्रसिद्ध स्तवन छिपा है। कोई मुखडे की पहली या दूसरी पंक्ति है तो कोई अन्तरे की भी पंक्ति है। काना आदि लगाकर स्तवन की कडी बनाओ- (आधा अक्षर भी नहीं दिया गया है) 20 में से 15 सही होने जरुरी है।

1. ध र त ल व र न स ह ल द ह ल च द म जि न त ण

.....

2. भ त क र त छ ट म र प्र ण प्र भ ए व म ग छ

.....

3. त र श र ण अ य छ व क र ल म न ल इ ज प्र भ

.....

4. क इ क ह ल ल र अ ल ख अ ल ख त ण ल ख प र

.....

5. ऋ ष भ ज ण द श प्र त ड क म क ज ह क ह

.....

6. द व न व म न ज ण उ त य ए व म द र

.....

7. प्र भ व र त र च र ण क ग र ध ल ज म ल

.....

8. द ख द ह ग द र ट य र स ख स प द स भ ट

.....

9. ध न ध न क्ष त्र म ह व द ह ज ध य प ड र क

.....

10. प व न ब न ज त ह म त र द श न क र न स

.....

11. क र ल क र ल र थ भ व ज न प्र ण श व स ख

.....

12. फ ल ड न ब ग म ख ल घ ण फ ल

.....

13. व म ल ग र य न भ य ह म म र व म ल ग र य न भ य

14. श त ज न व र स च र स ह ब श त क र ण इ ण क ल

15. स व क न व ल व ल त द ख म न म म ह र

16. श र ण र ख क प क र स ह ब य प र व

17. न म ह त र त र ण ह र क ब त र द श न

18. अ ण म न स ध अ स त द व ज ह र

19. म र अ ख म प व न थ अ व ज र

20. त र ह त र प्र भ म ज स व क भ ण ज ग त

जहाज मन्दिर पहेली
झेरॉक्स करके ही भरें व
इस पत्ते पर भेजे →

पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.
द्वारा: सोहनलाल एम. लुणिया
तेजदीप स्टील, 74 भण्डारी स्ट्रीट, पहला कुंभारवाडा लेन,
मुम्बई-400 004 (महा.) मो. 98693 48764

नियम :-

1. इस जहाज मंदिर पहेली का उत्तर 20 मार्च तक पहुँचना जरुरी है ।
2. विजेताओं के नाम व सही हल अप्रेल में प्रकाशित किये जायेंगे ।
3. प्रथम विजेताओं को 200 रू. का और 100-100 रु. के छह प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किये जायेगें।
4. सातों विजेताओं का चयन लॉटरी पद्धति से किया जायेगा।
5. प्रेषक अपना नाम, पता साफ-साफ अक्षरों में लिखकर भेजें।
6. जहाज मन्दिर पहेली प्रेषक इस पहेली की झेरॉक्स करवाकर भेजे।
7. उत्तर स्वच्छ-सुंदर अक्षरों में लिखें।
8. एक प्रश्न के दो उत्तर लिखें जाने पर एक सही होने पर भी गलत ही माना जायेगा।

:- पुरस्कार प्रायोजक :-
शा. सुगनचंदजी
राजेशकुमारजी बरडिया
(छबड़ा)
ब्रह्मसर हाल चैन्नई

प्रेषक

नाम .....

पता .....

.....

पोस्ट ..... पिन | | | | | | | जिला .....

राज्य ..... फोन नम्बर | | | | | | | | | | | |

जहाज मंदिर पहेली-104 का सही उत्तर

(i) 1. शंखनाद 3. अणगार 5. मुनिवर 7. उपासक 9. सरलता 11. अनुकुल 13. परीषह 15. प्रतिबोध 17. महावीर 19. गुरूदेव 21. नवकार 23. प्रभावती 25. उदायन 27. एषणीय 29. गिरनार 31. प्रकरण 33. सूर्योदय 35. उपवास 37. महाव्रत 39. कल्पवृक्ष ।

(ii) 2. अनुत्तर 4. परिग्रह 6. पुद्गल 8. समकित 10. गणधर 12. प्रमुदित 14. शत्रुंजय 16. जिनदत्त 18. भयभीत 20. पुण्यवंत 22. अमरता 24. हरिभद्र 26. आचारांग 28. अलौकिक 30. बलिहारी 32. चिदानंद 34. गुणवान 36. भवचक्र 38. निरामय 40. परमाणु ।

पुरस्कार विजेता

प्रथम पुरस्कार- विमला देवी तलेसरा जैन- भलरो का वाडा,

छह प्रेरणा पुरस्कार- सीमा भण्डारी-ब्यावर, मनोहरलाल झाबख-कोटा, मनोरीदेवी बाफणा- नंदुरबार, रीना सिंघवी-विजयनगर, मधु जैन-ऊटी, फीनी बेन बाफणा- कोट्टूर ।

इनके उत्तर पत्र सही थे- शान्ति बेन धारीवाल- कोटुर, सुचित्रा भंसाली-नोयडा, सुशीला भण्डारी-कोटा, प्रमिला बैगाणी-भीनासर, आदेशकुमार जैन-तलोदा, सरला राखेचा- लूणकरनसर, संगीता गोलच्छा- कोण्डागाँव, नेहा बाफणा-नदुंरबार, किरण बैद मुथा-रायपुर, रेणु चौपडा- ब्यावर, डॉ. सुनिता जैन- जयपुर ।

जहाज मंदिर पहेली 105 के पुरस्कार विजेता

प्रथम पुरस्कार-ममता गोलछा-कॉण्डागॉव

छह प्रेरणा पुरस्कार-श्वेता कोचर-तलोदा, निर्मला जैन-उदयपुर, दीपांजली संकलेचा-जयपुर, प्रेमचंद डागा-अक्कलकुवा, प्रीति लोढा-सारंगखेडा, सपना डाकलिया-जगदलपुर

इन उत्तर पत्र पूर्णरूप से त्रुटिहीन थे- साध्वीश्री विशालप्रभाश्रीजी- पालीताणा, साध्वी श्री दिव्यदर्शनाश्रीजी- जयपुर, आशीष खवाड- जयपुर, मनीला पारख- जयपुर, शोभा कोटडिया-त्रिची, कंचनबाई कोचर- नंदुरबार, जयश्री कोचर-नंदुरबार, यशीका कोचर-दुर्ग, सरोज गोलछा- राजनांदगॉव, सुरेश बोथरा-इचलकरंजी, भारती बोथरा-जियागंज, संगीता गोलछा- कोण्डागॉव, पुष्पलता नाहटा- जयपुर, सीमा जैन-जयपुर, कमलेश भंडारी- जयपुर, मधु जैन-ऊटी, चन्द्रसिंह जैन- उदपुर, वीणा जैन- जयपुर, नरेश सिंघी- मालपुरा, मिनाक्षी संकलेचा- अक्कलकुवा, विमला भंडारी- मैसूर, किरण बैद मुथा- रायपुर, मोना मेहता- इन्दौर, नमिता जैन-उदयपुर, सुशीला भण्डारी-कोटा, श्रीराम शर्मा- पालीताणा, मंजू लोढा-सूरत, सुजाता जैन- जयपुर, चेतना बच्छावत- अजमेर, अतिका छाजेड- बूंदी, सीमा छाजेड-उज्जैन, प्रमिला मेहता- जयपुर, तेजस बाफना-कोट्टूर, साक्षी धारीवाला-कोट्टूर, सरला गोलछा- लालबाई, लब्धि गोलछा- बालाघाट, जया गोलछा- लालबर्रा, निर्मला बच्छावत- फलोदी, करिश्मा चोपडा- कोट्टूर, टीना बाफना- नंदुरबार, मनोरीबाई बाफना- नंदुरबार, सलौनी चोरडिया- खापर, सुलोचना जैन- खापर, तारा रूणिवाल- जयपुर, हर्षित जैन- तिरूपात्तुर, वंशिका पारख- मुंबई, चित्रा झाबक -बडौदा, राजकुमारी भंडारी- बूंदी, श्वेता भंडारी- बूंदी, भरत संकलेचा- रायपुर, डॉ. राजेन्द्र पामेचा- जोधपुर, शशि पामेचा- जोधपुर, स्वरूपचंद जैन- जयपुर, अनुभा बैंगानी- जयपुर, भविक बांठिया-हैदराबाद, मदनलाल कोचर- अक्कलकुवा, भंवरलाल संकलेचा- अक्कलकुवा, फीणी बेन बापुना-उदयपुर।

जटाशंकर सरकारी अफसर था। था नहीं, पर अपने आपको बहुत ज्यादा बुद्धिमान समझता था। उसके मन मस्तिष्क पर यह सुरूर छाया रहता था कि मुझ से ज्यादा चतुर व्यक्ति इस ऑफिस में दूसरा नहीं है। वह पारिवारिक रिश्तेदारी के हिसाब से जल्दी ही प्रगति के पथ पर चढता हुआ अफसर बन गया था।

उसके अण्डर में काम करने वाला घटाशंकर एक बार उसके पास आया और बोला- सर! स्टोर पूरा भर चुका है। फाईलें बहुत जमा हो गई है। चालीस चालीस साल पुरानी फाईलें पडी है। कभी काम नहीं आती, इसलिये इनका निपटारा हो जाना चाहिये।

जटाशंकर कुछ पलों तक विचार करने के बाद बोला- मैं निरीक्षण करता हूँ, बाद में निर्णय लिया जायेगा।

थोडी देर बाद जटाशंकर उस कक्ष में पहुँचा। फाईलों पर धूल जमी हुई थी। दो चार फाईलों को देखने के बाद लगा कि इनका कोई काम नहीं है।

वह ऑफिस में गया और घटाशंकर को बोला- एक काम करो! ये फाईलें किसी काम की नहीं है। व्यर्थ जगह रोक रही है। नई फाईलों को रखने के लिये स्थान नहीं है। अत: इन समस्त फाईलों को नष्ट कर दो। पर हाँ! एक काम कर लेना। इन्हें नष्ट करने से पहले इन सबकी फोटोकॉपी कर रख लेना। कभी काम आ सकती है।

घटाशंकर का मुँह खुला का खुला रह गया। सारा स्टॉफ जटाशंकर की मूर्खता पर हँसने लगा। जब फाईलों को रखने के लिये जगह नहीं है तो फोटोकॉपी वाली फाईलों को रखने के लिये जगह कहाँ से आयेगी! फिर जब फोटोकॉपी रखनी है तो फाईलों को नष्ट करने की क्या जरूरत है!

पूर्व कर्म का बंधन फाईलें है और उनके उदय में बंधने वाले कर्म फोटोकॉपी! हमें कर्म नष्ट करना है। पर साथ साथ यह भी ध्यान रखना है कि उनकी फोटोकॉपी न हो पाये।

जटाशंकर

उपाध्याय श्री मणिप्रभसागर जी म.

सूरज सा तेज जिनमें,
चांद सी है शीतलता।
मोम सा है जिनका हृदय,
फल सी कोमलता,
जिनशासन के उजियारे।
बाल है जिनके घुंघराले,
हर प्रकार की उलझन,
मिनटों में सुलझाते।
ज्ञान के भंडार को,
दोनों हाथों से लुटाते,
वो तेजस्वी संत
श्री मणिप्रभ
गुरुवर कहलाते।।

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर मरुधर मणि

श्री मणिप्रभसागरजी म. सा.

के 56 वें

जन्म दिवस पर हार्दिक बधाइयाँ...

गुरुभक्त

बाबूलाल, किशनलाल, चम्पालाल, भुरचन्द, गौतमचन्द,
संजय, महावीर, राजीव, दिपक, हरीश, कपिल, अंकित, रवि, सौरभ, भव्य,
जैनम्, धैर्य बेटा-पोता पीरचन्दजी हंजारीमलजी वडेरा (भाणाणी) परिवार

"महालक्ष्मी"
MAHALAXMI GROUP OF TEXTILES
नारी का गौरव

प्रतिष्ठान

• पीरचन्द बाबूलाल एन्ड कंपनी, बाड़मेर • महालक्ष्मी पोपलीन मिल्स प्रा. लि.

इचलकरंजी-मालेगांव-बालोतरा

RNI : RAJHIN/2004/12270
Postal registration No. RJ/SRO/9625/2015-2017 Date of Posting 7th

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय प्रवर मरुधर मणि

श्री मणिप्रभसागरजी म. सा.

के **56** वें वर्ष प्रवेश पर जन्म दिन की

हार्दिक शुभकामनाऐं
अभिवंदना....
अभिनंदना...

गुरूदेव मेरे, गुरूदेव मेरे, गुरूदेव मेरे...
तेरे दम से चेहरे पे रौनक आई है,
तू है तो ये जिन्दगी मुस्कुराई है।
हमने जो कुछ भी है पाया,
तेरी रहमत का असर है,
गुरूदेव मेरे, गुरूदेव मेरे।।

गुरुभक्त

सौ. ऊषादेवी-जसराज, सौ. कोमल-रवि, सौ. रूचिका-गौरव
राहुल छाजेड़ परिवार (हरसाणी वाले), बाड़मेर-इचलकरंजी
पता - मणि विहार, 12/552/1 आर. पी. रोड़, इचलकरंजी-416115

फर्म : संपतराज बाबुलाल ॲण्ड कंपनी

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट,
जहाज मन्दिर, माण्डवला - 343042, जिला - जालोर (राजस्थान)
फोन : 02973-256107 / 256192 फैक्स : 02973-256040, 09649640451
e-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www. jahajmandir.com

श्री जिनकांतिसागर सुरि स्मारक ट्रस्ट, माण्डवला के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. यू. सी. जैन द्वारा महालक्ष्मी कम्प्यूटर सर्विस पुरा मोहल्ला, शिवगणी रोड, जालोर से मुद्रित एवं जहाज मन्दिर, मांडवला, जि. जालोर (राज.) से प्रकाशित। सम्पादक - डॉ. यू. सी. जैन
www.jahajmandir.org

शब्दांकन : धर्मेन्द्र बोहरा, जोधपुर-98290 22408